उनिषद्-सुधा बिन्दु

गुरु १

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

गुरु साक्षात् भगवान् है। जिज्ञासु-साधकों के पथ-प्रदर्शनार्थ मानव-रूप में अर्थात् सद्गुरु के स्वरूप में भगवान् स्वयं ही पधारते हैं। भगवद्-कृपा ही गुरु के रूप में प्रकट होती है। सद्गुरु-दर्शन ही भगवद्-दर्शन है। गुरु का भगवान् के साथ ऐक्य होता है। गुरु भगवद्-स्वरूप होता है। गुरु और गोविन्द एक ही हैं। गुरु भगवद्-भक्ति की प्रेरणा देता है, उसकी उपस्थिति सबको पवित्र करती है।

भगवान् और मानव के बीच गुरु एक कड़ी है। उसने **'इदं'** से **'तत्'** तक प्रोन्नत हो कर दोनों लोकों में अबाधित प्रवेश का अधिकार प्राप्त किया हुआ है। गुरु स्वयं अमरत्व के प्रवेश-द्वार पर खड़े हो कर अपने एक अभय हस्त से साधनारत साधकों को स्वयं झुक कर उठाता है और दूसरे वरदहस्त से सच्चिदानन्द के शाश्वत राज्य में प्रवेश दिलाता है।

सद्गुरु

गुरु बनने से पूर्व व्यक्ति प्रथमतः भगवान् से आदेश प्राप्त करे। भगवान् के आदेशानुसार ही गुरु बनने का अधिकार मिलता है। केवल शास्त्रीय ज्ञान से ही कोई गुरु नहीं बन सकता। जिस वेदवेत्ता ने आत्मा की प्रत्यक्षानुभूति कर ली है अर्थात् भगवद्-साक्षात्कार प्राप्त कर लिया है, वही गुरु बन सकता है। जीवन्मुक्त ही वास्तविक गुरु, आध्यात्मिक गुरु बनने का अधिकारी है, वही सद्गुरु है। गुरु ब्रह्म से अभिन्न है। वही ब्रह्मवेत्ता है।

सद्गुरु अनेक सिद्धियों से सुसम्पन्न होता है। सम्पूर्ण ईश्वरीय सम्पत्ति तथा दिव्य ऐश्वर्य का वह स्वामी है।

सिद्धियों की प्राप्ति सन्त की महत्ता की कसौटी नहीं है, न ही इस बात का प्रमाण है कि सिद्धियों के स्वामी ने भगवद्-साक्षात्कार कर लिया है। सद्गुरु तो सिद्धियों को दर्शाते भी नहीं, वह जिज्ञासुओं-साधकों को प्रोत्साहित करने के लिए तथा उनमें श्रद्धा-विश्वास बढ़ाने के लिए कभी-कभी चमत्कार दिखा देते हैं।

सद्गुरु तो स्वयं ब्रह्म ही है। वह आनन्द, ज्ञान तथा करुणा का सागर है, वह आत्म-रूपी जहाज का कप्तान है, वह आनन्द-स्रोत है। वह आपकी सभी विघ्न-बाधाओं, दुःखों तथा चिन्ताओं को विनष्ट करता है। दिव्यता के पथ का प्रदर्शन वही करता है। वह आपके अज्ञान के आवरण को विदीर्ण करता है। वह आपको दिव्य तथा अमर बना देता है। आपकी हीन निम्न तामसिक प्रवृत्तियों को रूपान्तरित करने में केवल वही समर्थ है। भवसागर में डूबने से बचाने के लिए वह ज्ञान की डोरी से आपको बाहर निकालता है, उसको (गुरु को) मात्र मनुष्य नहीं मानना चाहिए, यदि कहीं ऐसा समझते रहे तो पशुवत् ही रहेंगे। अपने गुरु की सदैव पूजा कीजिए तथा आदर, प्रेम एवं श्रद्धा से वन्दन कीजिए।

सद्गुरु ही ईश्वर है, उसके वाक्य को भगवद्-वाक्य मानिए। वह भले ही शिक्षा न दे, उसकी उपस्थिति ही प्रेरणा-स्रोत होने के कारण आपको प्रगति-पथ की ओर प्रेरित एवं प्रोन्नत करती है। उसके सत्संग से आत्म-ज्ञान के प्रकाश की प्राप्ति होती है। उसके सान्निध्य में आध्यात्मिक विद्या आ जाती है। गुरु ग्रन्थ साहब पढ़िए, आपको गुरु-महिमा का ज्ञान हो जायेगा।

मानव को मानव द्वारा ही शिक्षा दी जा सकती है। इसीलिए भगवान् भी आपको मानव-शरीर के द्वारा गुरु के माध्यम से ही शिक्षा देते हैं। मानवीय आदर्श की पूर्णता गुरु में ही हो सकती है। आपको उन्हीं के आदर्शों के साँचे में अपने-आपको ढालना है। आपका मन स्वतः ही स्वीकार

करेगा कि यही महान् व्यक्ति पूजा-अर्चना का योग्यतम अधिकारी है।

सद्गुरु मोक्ष का द्वार है। वही इन्द्रियातीत सत्-चित्-आनन्द (सच्चिदानन्द) का प्रवेश-द्वार है, परन्तु प्रवेश करने का उद्यम-पुरुषार्थ तो शिष्य को स्वयं ही करना होगा। गुरु सहायता देंगे; किन्तु व्यावहारिक साधना करने का पूर्ण उत्तरदायित्व शिष्य पर ही रहेगा।

गुरु की अनिवार्यता

अध्यात्म-मार्ग पर आरूढ़ साधक के लिए प्रारम्भ में गुरु की आवश्यकता होती ही है। एक जलती हुई मोमबत्ती ही दूसरी मोमबत्ती को जला सकती है, एक प्रज्वलित दीपक ही दूसरे दीपक को प्रज्वलित कर सकता है। इसी प्रकार एक आत्मज्ञानी ही दूसरी आत्मा की ज्ञान-ज्वाला को प्रदीप्त कर सकता है अर्थात् एक प्रबुद्ध आत्मा ही दूसरे को प्रबुद्ध कर सकती है।

कई मनुष्य स्वतन्त्र रूप से कई वर्षों तक ध्यानाभ्यास करते रहते हैं, तब जा कर कहीं उन्हें गुरु की आवश्यकता का भान होने लगता है; क्योंकि अब उन्हें कठिनाइयों, विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है और इन बाधाओं को दूर करने में स्वयं समर्थ नहीं होते, तब वे गुरु की खोज में निकलते हैं।

जो बदरीनाथ-धाम की यात्रा सफलतापूर्वक कर आया है, वही तो बदरीनाथ का मार्ग प्रशस्त करेगा। अध्यात्म-मार्ग में तो पथ-प्रशस्त करना और भी कठिन होता है, मन तो कई बार आपको पथ-भ्रष्ट करता है। केवल गुरु ही आपको पतन-गर्त से बचा कर विघ्न-बाधाओं का निवारण कर सन्मार्ग पर ले जाता है, मोक्ष का मार्ग और बन्धन के मार्ग का अन्तर भी गुरु ही बताता है। अतः केवल गुरु ही आपका मार्ग-दर्शन कर मोक्ष-मार्ग बताता है। बिना पथ-प्रदर्शन के बदरीनाथ जाने की इच्छा रखते हुए भी आप दिल्ली पहुँच जायेंगे।

शास्त्र तो सघन वन-प्रदेश (घोर अरण्य) की तरह हैं जिनमें कई सन्दिग्ध स्थल पड़ते हैं, इसी प्रकार शास्त्रों में अनेकार्थक परिच्छेद होते हैं। परस्पर विरोधी अंश भी मिलते हैं, रहस्यमय अर्थों वाले लेखांश, परिच्छेद होते हैं, कई एक के अर्थ अनेक प्रकार के हो सकते हैं, कई स्थलों का पारस्परिक प्रसंग, सन्दर्भ मिलाना पड़ता है, अतः ऐसे अस्पष्ट स्थलों पर सद्गुरु की आवश्यकता पड़ती है जो ठीक अर्थ बता कर सन्देहों का निवारण, शंकाओं का समाधान करते हैं और शिक्षा का, उपदेश का सारतत्त्व स्पष्ट करते हैं। इससे गुरु की अनिवार्यता सिद्ध होती है।

अध्यात्म-मार्ग में प्रत्येक साधक के लिए सद्गुरु की अति-आवश्यकता है। गुरु ही आपको दोष रहित बनायेंगे; क्योंकि अहंकारवश आप अपनी त्रुटियाँ स्वयं नहीं निकाल सकते, जैसे अपनी पीठ देखना कठिन है वैसे ही अपने दोषों को ढूँढ़ निकालना बहुत ही कठिन है। गुरु के सान्निध्य में, संरक्षण में, मार्ग-दर्शन में ही साधक अपनी आसुरी-सम्पदा का उन्मूलन कर सकता है।

सद्गुरु की शरण में रह कर साधक पथ-भ्रष्ट होने से बचा रहता है। गुरु का सान्निध्य अथवा सत्संग एक ऐसा कवच है जो भौतिक जगत् की प्रतिकूल शक्तियों तथा प्रलोभनों से बचाता है।

जिन्होंने सद्गुरु की सहायता के बिना पूर्णता प्राप्त कर ली है ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण दे कर यह सिद्ध नहीं करना चाहिए कि गुरु की आवश्यकता ही नहीं है; क्योंकि ऐसे महान् व्यक्ति आध्यात्मिक जगत् में अपवाद-स्वरूप हैं। साधारणतया ऐसा नहीं पाया जाता है। व्यक्ति अपनी सेवा, स्वाध्याय, ध्यान और कई जन्मों के संस्कारों के बल पर महानता के शिखर पर पहुँचने के कारण ही गुरु-रूप में ही प्रकट होते हैं। वे पूर्व-जन्मों में गुरु से शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। यह जन्म तो आध्यात्मिक उपलब्धियों की एक कड़ी है, इससे गुरु-महिमा में किंचित् मात्र भी तो न्यूनता नहीं आती।

कई एक आचार्य साधकों को बहकाते हैं, कुमार्ग पर ले जाते हैं। वे सबको यही कहते हैंह्न ''अपने आत्मोद्धार के लिए स्वयं सोचो-विचारो। किसी भी गुरु के प्रति आत्म-समर्पण मत करो। किसी गुरु की शरण में, आश्रय में मत जाओ। किसी को भी गुरु धारण नहीं करो।'' जब कोई ऐसा

कहता है, तो उसका अभिप्राय यह होता है कि वह स्वयं गुरु बनना चाहता है। किन्तु आप ऐसे छद्मवेशधारी गुरुओं के पास मत जाइए, न ही उनके भाषण-उपदेश सुनिए।

समस्त महापुरुषों के गुरु थे। सभी सन्तों, ऋषियों-मुनियों, जगद्गुरुओं, अवतारों, महात्माओं, पैगम्बरों के अपने-अपने गुरु थे ही, भले ही वे स्वयं भी महान् आत्म-ज्ञानी थे। श्वेतकेतु ने उद्दालक से सत्य का ज्ञान प्राप्त किया, मैत्रेयी ने याज्ञवल्क्य से, भृगु ने वरुण से, नारद ने सनत्कुमारों से, नचिकेता ने यम से तथा इन्द्र ने प्रजापति से शिक्षा-दीक्षा पायी, इसी प्रकार अनेकों ने नम्रतापूर्वक विद्वज्जनों-ज्ञानियों की शरण में जा कर ब्रह्मचर्य धारण कर अति-कठिन नियमों (ब्रह्मचर्यादि) का पालन निष्ठा से करने एवं कठोर अनुशासन के अभ्यास के उपरान्त ही ब्रह्मविद्या प्राप्त की थी।

भगवान् श्रीकृष्ण ने सान्दीपनि ऋषि के श्रीचरणों में बैठ कर शिक्षा ग्रहण की थी, भगवान् श्रीराम को गुरु वसिष्ठ ने उपदेश दिया। देवताओं तक के गुरु-आचार्य बृहस्पति हैं, कई महान् दिव्यात्माओं को गुरु दक्षिणामूर्ति के श्रीचरणों में बैठ कर ही अध्यात्म का उपदेश मिला।

नव-साधक को तो सर्वप्रथम अपना गुरु धारण करना चाहिए ही। प्रारम्भ में ही ईश्वर को गुरु मान कर चलने से काम नहीं बनेगा। शिष्य का (साधक का) मन शुद्ध हो, सदाचार नैतिक परिपक्वता संयुक्त हो, वह पूर्णतया धर्मात्मा हो, देहाध्यासी नहीं हो। तभी वह ईश्वर को गुरु-रूप में मानने का अधिकारी बन सकता है।

गुरु-पद से किसे सुशोभित करना चाहिए

जिसके दर्शन मात्र से शान्ति का संचार होता हो, जिसके उपदेश-वाणी से प्रेरणा मिले, जो आपके संशयों-शंकाओं का निवारण करने में समर्थ हो, जो काम, क्रोध, लोभ पर विजय प्राप्त कर चुका हो, जो निःस्वार्थी हो, प्रेमिल हो तथा निरहंकारी हो, जो आपकी साधना में सहायक हो सके, जो आपकी निष्ठा को अविचलित रखे, आपकी साधना में आपको ऊपर उठा सके, जिसकी उपस्थिति मात्र से आप आध्यात्मिक रूप से अपने-आपको उन्नत अनुभव करें, उसी को गुरु धारण करें। एक बार गुरु-धारण का निर्णय कर लेने के पश्चात् शंका रहित हो कर और श्रद्धा सहित उसका अनुगमन-अनुसरण करो, ईश्वर आपका पथ-प्रदर्शन उसी गुरु के माध्यम से ही करेंगे।

सद्गुरु का चयन करने तक बुद्धि का आश्रय अधिक नहीं लेना चाहिए, यदि ऐसा करेंगे तो भारी भूल होगी, आप असफल होंगे, यदि निर्णय नहीं ले पाते तो ऐसे साधु-महात्मा का अनुगमन करो जो वर्षों से इस पथ का पथिक रहा हो, जो दैवी सम्पदा से सुसम्पन्न तथा शास्त्रवेत्ता भी हो। यदि ऐसा सत् पुरुष न मिले, तो आप ऐसे सद्ग्रन्थों का आश्रय लें जो ऐसे सन्त, महापुरुषों (महान् पुरुषों) द्वारा रचित हों, जो भगवत्साक्षात्कार-प्राप्त होंहृहृजैसे आदि गुरु शंकराचार्य तथा दत्तात्रेय आदि। यदि इनके चित्र प्राप्त हो सकें, तो उन्हें सामने रख कर श्रद्धा-भक्ति से उनकी पूजा करें, आपको प्रेरणा मिलेगी। यह भी हो सकता है कि सद्गुरु आपको स्वप्न में दर्शन दें और यथोचित समय आ जाने पर दीक्षा भी दे दें। एक सच्चे जिज्ञासु-साधक को रहस्यपूर्ण ढंग से पथ-प्रदर्शन मिलता है, उचित समय आ जाने पर गुरु-शिष्य का मिलन प्रभु रहस्यमय ढंग से करा देते हैं।

ईश्वर की रहस्यमयी कृपा

ईश्वरीय गुप्त रहस्यमयी सहायता के कई एक उदाहरण निम्नांकित हैं: सन्त एकनाथ जी को तो आकाशवाणी सुनायी दीहृहृ''देवगिरि जा कर जनार्दन पन्त से मिलो, वही तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करेंगे।'' एकनाथ जी ने ऐसे ही किया और उन्हें गुरु मिल गये। भक्त तुकाराम जी को **'राम कृष्ण हरि'** का मन्त्र स्वप्न में मिला, इसी के जप द्वारा उन्हें भगवान् श्रीकृष्ण के दर्शन हुए। श्रीकृष्ण भगवान् ने नामदेव को मल्लिकार्जुन निवासी एक संन्यासी से दीक्षा लेने का निर्देश दिया। रानी चुडाला को कुम्भ मुनि का रूप धारण करना पड़ा, तब कहीं वन में अपने पति शिखिध्वज के सामने प्रकट हो कर कैवल्य रहस्यों में उसे दीक्षित किया। मधुर कवि नभ-मण्डल में क्रमशः तीन दिन प्रकाश-पुंज देखते रहे, इसी ने पथ-प्रदर्शन किया और वे गुरु नम्मालवर के यहाँ पहुँच गये, जो तिन्नेवेली

के समीप एक इमली के पेड़ के नीचे समाधि लगाये बैठे थे। बिल्वमंगल को गुरु चिन्तामणि गणिका से उपदेश मिला, जिस नृत्यांगना पर वे आसक्त रहे थे। महात्मा तुलसीदास जी को एक अदृश्य शक्ति ने श्री हनुमान् जी की ओर प्रेरित किया, जिनके द्वारा उन्हें भगवान् राम के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

योग्य शिष्यों को सुयोग्य-समर्थ गुरु प्राप्त हो ही जाते हैं। भगवद्-साक्षात्कार-प्राप्त आत्माएँ अब भी अप्राप्य नहीं हैं। साधारण अज्ञानी लोग उन्हें पहचान नहीं पाते। केवल विरले लोग ही शुद्ध आत्माओं तथा दैवी सम्पद्-सम्पन्न, भगवद्-साक्षात्कार-प्राप्त महानुभावों को जानने तथा उनके सत्संग से लाभान्वित होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं।

जब तक संसार है और परिश्रम तथा पुरुषार्थ करने वाली जिज्ञासु आत्माएँ हैं, तब तक गुरु और वेद आत्म-साक्षात्कार कराने के लिए उनका पथ-प्रदर्शन करते ही रहेंगे। कलियुग में सतयुग की अपेक्षा ऐसी आत्माएँ गिनती की ही रहेंगी; किन्तु साधकों और जिज्ञासुओं के सहायतार्थ अवश्यमेव मिलेंगी। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता, स्वभाव तथा बुद्धि के अनुसार ही अपने पथ का चयन करना चाहिए, उसके सद्गुरु उसी पथ पर ही उससे आ मिलेंगे।

शिक्षागुरु तथा दीक्षागुरु

मनुष्यों को जीवन में दो कार्य करने होते हैं, द्विविध कर्तव्य-पालन करना होता हैह्नह्नएक तो है जीवन-निर्वाह और दूसरा है आत्म-साक्षात्कार। पहले उद्देश्य के लिए उसे धन-प्राप्त्यर्थ विद्या ग्रहण करनी ही होती है, दूसरी ओर आत्म-साक्षात्कार के लिए सेवा, प्रेम, ध्यान का आश्रय लेना होता है। जगत्-सम्बन्धी शिक्षा देने वाला शिक्षागुरु कहलाता है और अध्यात्म-विद्या प्राप्त कराने वाला दीक्षागुरु कहलाता है। शिक्षागुरु तो उतने हो सकते हैं जितनी विद्याएँ सीखनी हैं और दीक्षागुरु केवल एक ही हो सकता है जो भगवद्-साक्षात्कार का मार्ग अर्थात् मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है।

गुरु के प्रति अनन्य निष्ठा

जल-प्राप्ति के लिए अनेक उथले गड्ढे खोदने का विफल प्रयास नहीं करिए, वे तो शीघ्र ही सूख जायेंगे। एक ही स्थान पर पर्याप्त गहरा कुआँ खोदिए, अपने यथाशक्ति परिश्रम-पुरुषार्थ को उसी में केन्द्रित करिए, आपको स्वच्छ तथा शुद्ध जल पर्याप्त मात्रा में मिलेगा जो शीघ्र समाप्त नहीं होगा। ठीक इसी प्रकार एक ही गुरु की शिक्षाओं को मन में धारण करिए। एक ही गुरु द्वारा ज्ञानामृत का पान करिए, उन्हीं के चरणों में निष्ठापूर्वक कई वर्षों तक वास करिए, श्रद्धा रहित हो कर एक सन्त से दूसरे के पास कौतूहलवश भागते रहने से कोई लाभ नहीं होगा। वेश्या की तरह मन को बदलते न रहिए। एक ही सद्गुरु के निर्देशों का पालन कीजिए। अनेकों के पास जा कर अनेक विधियाँ अपनाने से आप भ्रमित हो कर दुविधा में पड़ जायेंगे।

एक चिकित्सक से तो उपचारार्थ नुस्खा लेते हैं। दो चिकित्सकों से परामर्श लेते हैं; परन्तु तीन डाक्टरों-चिकित्सकों से तो हम अपनी मृत्यु को स्वयं निमन्त्रित करते हैं। अतः अनेक गुरुओं के चक्कर में पड़ कर हम स्वयं घबरा जायेंगे, सही दिशा नहीं जान पायेंगे। एक गुरु तो **'सोऽहम्'** का जप बतायेगा, दूसरा श्रीराम का, तीसरा अनहद-नाद सुनने को कहेगा। आप भ्रमित हो जायेंगे। एक ही गुरु के आश्रित रह कर उसके निर्देशों और उपदेशों का अनुपालन कीजिए।

अतः एक सद्गुरु की शरण में अनन्य निष्ठा रख कर उनके आदेशों का दृढ़तापूर्वक पालन कीजिए।

सब की सुनिए; किन्तु अनुसरण एक का ही करिए।

श्रद्धा सबमें रख सकते हैं; पर निष्ठा तथा अनन्यता एक के प्रति ही रखिए। आदर सबका करिए; किन्तु पूजा-अर्चना एक की ही करिए। ज्ञान-संग्रह सबसे करिए; किन्तु अनुसरण एक का करिए। एक ही गुरु के आदेशों-उपदेशों को आत्मसात् करिए, तभी आपकी प्रगति दिव्यता के सुपथ पर शीघ्रातिशीघ्र होती जायेगी।

(अनुवादक : श्री स्वामी अर्पणानन्द जी महाराज)

पूर्ण सरलता ही मोक्ष है

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

चरम आध्यात्मिक प्रक्रिया का मूल और सारतत्त्व है एकीकृत आन्तरिकता। यह सम्पूर्ण जटिलताओं को एक ओर हटा कर परमात्मा में निवास करना, निज आत्मा में निवास करना है। आप अन्ततः एक ऐसी परिशुद्ध अवस्था में पहुँच जाते हैं जहाँ आपका हृदय भगवान् के अतिरिक्त अन्य कुछ भी कामना नहीं करता। आपका मन भगवान् के सिवा और किसी का चिन्तन नहीं करता। समस्त विविधताएँ मूक कर दी जाती हैं, दबा दी जाती हैं, पीछे हटा कर विलुप्त कर दी जाती हैं और आप केवल भगवान् के साथ एकाकी परिशुद्ध अवस्था में होते हैं।

अन्ततः लक्ष्य तो हैह्वह्वस्वयं अपने-आपको भी हटा कर सम्पूर्ण चेतना को केवल भगवान् से भर देना। एकीकृत चेतना स्वाभाविक (अकृत्रिम) है। द्वैत रहित चेतना परमात्मा है। यही मोक्ष है। आप स्वयं को सदा के लिए अपने-आप (जो कि आपके बन्धन का कारण है, जो कि आपकी समस्त अशान्ति का कारण है) से मुक्त कर लेते हैं।

जब तक 'मैं, मैं, मैं' प्रबल रहती है, दृढ़ता से डटी रहती है, तब तक हमारे दुःखों का कभी अन्त नहीं होता। जब आप इस 'मैं' को हटा देने में सफल हो जाते हैं, इसे विदाई दे देते हैं, जाने के लिए कह देते हैंह्वह्व'न, न, अब मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है', तब आपके हृदय के द्वार खुल जाते हैं और भगवान् भीतर प्रवेश करते हैं। उसी क्षण शान्ति का साम्राज्य हो जाता है। तब फिर विविधता, जटिलता, भ्रम, विकर्षण, बहुमुखी चिन्तन अथवा अशान्ति और जरा-सी भी नहीं रहती।

तब फिर केवल दिव्यता रहती है। केवल एकमेव 'वह' रहते हैं। केवल शान्ति व्याप्त रहती है और शान्ति भगवान् हैं। यह शोर अथवा ध्वनि का अभाव नहीं है, यह सब-कुछ के अतीत जाना है; एक, केवल एकमेव, जो कि वास्तविक हैह्वह्वजहाँ जा कर संसार का सदा-सदा के लिए अन्त हो जाता हैह्वह्वउसमें निवास करना है। सदा एक वही था, वही है और सदा केवल एकमेव वही रहेगा। यह परम परिशुद्ध अवस्था है। परम परिशुद्धि वह है जहाँ आपका ध्यान खींचने या भयभीत करने के लिए अन्य कोई है ही नहीं।

उस परम परिशुद्धि, चरम परिशुद्धि, जो कि परमात्मा ही हैं, का पथ अकृत्रिम सम्पूर्ण जीवन ही है, निश्छल जीवन जीना, निष्कपट चिन्तन करना, सहज भाव और सरल स्वभावह्वह्वकोई उलझन नहीं, राग नहीं, अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू में सरलता, प्रत्येक स्तर पर सरलता। जैसे बच्चे सरल होते हैं। उनको कोई चिन्ता नहीं होती। ''बालवत् मेरे पास आओ, क्योंकि ऐसों के लिए ही स्वर्ग का साम्राज्य है।'' (बाइबल)

समस्त समस्याओं का मूल है अहम्। यह समस्त विरोधों, संघर्षों, सभी झगड़ों और असामंजस्यताओं का मूल स्रोत है। यह अपरिहार्य विपत्ति है, इसे नियन्त्रण में रखना अति-आवश्यक है। श्री रामकृष्ण परमहंसदेव ने इसके विषय में अत्यन्त सुन्दर और सरल ढंग से कहा हैह्वह्व''इसे सात्त्विक अहं में, हानि रहित अहं में परिवर्तित कर दें। इसे भगवान् की भक्ति के, ईश्वर-साक्षात्कार की आकांक्षा के पारस-पत्थर से स्पर्श करवा दें।'' इसका आध्यात्मीकरण करके इसके द्वारा हानि किये जाने का और संकट पहुँचाने का तत्त्व निकाल दें। यह रहेगा तो वही, क्योंकि अहं से पूर्णतया बच सकना सम्भव नहीं है; किन्तु इसका हानि पहुँचाने वाला तत्त्व परिवर्तित किया जा सकता है।

यह उस सपेरे की भाँति ही है जो भयंकर नाग चौबीसों घण्टे अपने साथ लिये हुए घूमता है। वह उसे हाथ में उठा कर दर्शकों को दिखाता है और ऐसा वह इसलिए कर पाता है, क्योंकि इसका विष निकाल कर उसने इसे हानि रहित बना

दिया होता है। बाह्य रूप से यह वैसा ही दिखायी देता है। फुफकारता भी है। किन्तु सपेरा जानता है कि इससे कोई भय नहीं है, क्योंकि इसे विषहीन किया जा चुका है।

अत: पूर्ण सरलता अर्थात् भगवान् की ओर अग्रसर होने की सम्पूर्ण प्रक्रिया हैह्वह्वस्वयं को तामसिक अथवा राजसिक अहं की समस्त उलझनों से हटा कर, सात्त्विक अहं की अवस्था में स्थित हो जाना। 'मैं' तो रहता है, किन्तु इस रूप में कि ''मैं भगवान् का दास हूँ, भगवान् के दासों का दास हूँ, मैं सेवा करने के लिए ही हूँ, इसलिए मैं सबको अपने स्वामी, अपने मालिक की भाँति देखता हूँ। मेरा अस्तित्व समस्त प्राणियों का आदर-सम्मान करने के लिए है।''

यह 'मैं' भयानक 'मैं' नहीं है। यह 'मैं' अनिष्टकारी नहीं है। यह अनाध्यात्मिक अथवा दिव्यता विहीन 'मैं' नहीं है, क्योंकि इसको सात्त्विक बना कर शुद्ध कर लिया गया है। बालक भी 'मैं' कहता है, किन्तु यह 'मैं' जल पर खींची गयी रेखा के समान है। यह कोई चिह्न पीछे नहीं छोड़ती; क्योंकि इसमें अहं नहीं है, इसमें दर्प नहीं है, इसमें भोलापन है, यह सरल है।

आन्तरिक स्वभाव की सरलता ही वह मार्ग है जो प्रभु को प्रिय है, इसलिए 'बालवत् सरल' होने की चेतावनी दी गयी है। गुरुदेव ने एक स्थान पर कहा हैह्वह्व''बचकाने, चपल, छिछोरे मत बनो; किन्तु बाल-सुलभ सरलता होनी आवश्यक है। यह कृपा और आशीर्वाद प्राप्त करने का रहस्य है।''

अत: हम जितना ही अपने आन्तरिक और बाह्य जीवन को सरल बना लेते हैं, उतने ही विकर्षण (चित्त-विक्षेप) कम होते जाते हैं। हम आन्तरिक स्तर पर संग्रहित हो जाते हैं, भगवान् पर एकाग्रता हो जाती है और हमारी आन्तरिकता एकीकृत हो जाती है। यही योग की मुख्य प्रक्रिया है। हमारी आन्तरिक अवस्था ऐसी ही होनी चाहिए। जब आप उच्च आकांक्षा के द्वारा, भक्ति के और एकाग्रता के द्वारा समस्त विकर्षणों को हटा देते हैं, दर्जनों दिशाओं में विचरने वाले भ्रमित विविध चिन्तनों को हटा देते हैं और केवल एक ही दिशा की ओर बढ़ने लगते हैं, तब आप पूर्ण सरलता के बिन्दु तक आ जाते हैं, तब आप अनेकों में नहीं, 'एक' में ही निवास करने लगते हैं।

यही आपकी साधना का अंग बने। यही आपके आध्यात्मिक और नैतिक अनुशासन का अंग हो। आपके निजी जीवन का व्यक्तिपरक और विषयपरकह्वह्वदोनों ही दृष्टियों से यही मूल निजी दर्शन हो। तब आप देखेंगे कि सब-कुछ यहीं और अभी सम्भव हो जायेगा; क्योंकि अन्तत: यह एक सामान्य सत्य है कि सब-कुछ का यहाँ ही और अभी ही भुगतान होना है।

अब ही वह समय है और यही वह स्थान है जहाँ आपने स्वयं को मुक्त करके मुक्त चेतना में प्रवेश पाना है। यदि यहाँ और अब यह नहीं कर सकते, तो कभी भी आप यह नहीं कर पायेंगे; क्योंकि अन्य कोई स्थान और समय इसके लिए नहीं है। आप भले ही कहीं भी हों, आप स्वयं अपने-आपमें हैं। आपको अपने भीतर ही अन्तत: यह प्रक्रिया करनी होगी और मोक्ष के परम लक्ष्य में प्रवेश पाना होगा, अनुभूति प्राप्त करनी होगी। यही सत्य है।

भगवान् हमें हमारे समक्ष उपस्थित इस सामान्य सत्य को स्पष्टतया देखने में सहायता करें। हममें विभिन्न काल्पनिक मान्यताएँ उत्पन्न करके, मन जो चतुराइयाँ करके हमें सरलता की इस साधना से दूर ले जाने का छल करता है, उसे समझने के लिए भगवान् हमें विवेक और क्षमता दें! जहाँ सब-कुछ सरल है, वहाँ भी जो जटिलताएँ उत्पन्न करने वाला है, उस मन से सावधान रहें ! उस मन से बच कर रहें जो वस्तुओं को उलझा कर भ्रान्ति उत्पन्न कर देता है। यह मन तो सदा ही रहता है। आपने ही इसमें सतर्क रहना है। यह आपका मित्र नहीं है, यह समझें कि यह ऐसा कपटी है जो छलपूर्वक आपके पथ में रुकावट डालने वाला है।

इसलिए हमें भीतर से जागरूक और सावधान रहना होगा और अपनी आन्तरिक वास्तविक सरलता को छोड़ने से इनकार करना होगा। सतर्कता और सचेतनतापूर्वक हम अपनी वास्तविक सरलता को बनाये रखने में तथा अपने स्रोत और अपने व्यक्तित्व में सीधा सम्बन्ध बनाये रखने में सक्षम होंगे। अपने उसी स्रोत में निवास करें !

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

योगवासिष्ठ

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

लालित्यपूर्ण संस्कृत कविता में रचित योगवासिष्ठ सर्वोत्कृष्ट आध्यात्मिक चिन्तन से परिपूर्ण एक दार्शनिक ग्रन्थ है। इसका प्रारम्भ क्षणिक तथा मृगमरीचिका के समान कभी भी पूरी न होने वाली कामनाओं को जन्म देने वाले जीवन के दुःखों से होता है। ऐन्द्रिक सुख भ्रामक हैं। मानव का अज्ञान उसे भौतिक पदार्थों (जो तभी तक सुखकर प्रतीत होते हैं, जब तक उनका उपभोग करने की कामना रहती है) में सुख ढूँढ़ने के लिए विवश करता है। अशान्त और अधीर मन को संसार की किसी भी वस्तु में शान्ति नहीं मिलती।

कामनाओं का कोई निश्चित लक्ष्य नहीं होता। एक वस्तु से दूसरी वस्तु तक उनकी उछल-कूद का उद्देश्य मात्र एक ऐसे सुख को प्राप्त करना होता है, जो उन्हें संसार के किसी बाह्य पदार्थ से कदापि नहीं मिल सकता। मानव का सम्पूर्ण जीवन एक व्यर्थ का मूर्खतापूर्ण क्रिया-कलाप है। चिन्ता-ग्रस्त मन को अन्त में इससे कुछ भी उपलब्ध नहीं हो पाता। सुख (प्रसन्नता) के वास्तविक स्वभाव से अनभिज्ञ रहने के परिणाम-स्वरूप ही इस प्रकार की दुःखद परिस्थिति का सामना करना पड़ता है। सम्यक् ज्ञान की उपलब्धि के बिना मानव को वास्तविक सुख और प्रसन्नता की प्राप्ति नहीं हो सकती।

ज्ञान आकाश से नहीं टपक पड़ता। इसे प्राप्त करने के लिए उचित रीति से निर्देशित प्रयत्न करना चाहिए। तभी पूर्णता की प्राप्ति होती है। सन्तोष, शान्ति (मानसिक शान्ति), सत्संग (सत्पुरुषों का संग) तथा विचार (सत्य का बुद्धिसंगत अन्वेषण) की प्रवृत्तियों को व्यवहार में लाने का प्रयत्न करना चाहिए। ज्ञान (जो मात्र बौद्धिक समझ या सैद्धान्तिक पठन नहीं है तथा आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि अथवा शाश्वत सत्य के साक्षात्कार से अभिन्न है) की प्राप्ति का इससे उत्तम उपाय और कोई नहीं है।

संसार का आदर्श स्वरूप

द्रष्टा पदार्थों को देखता है। इसका अर्थ यह हुआ कि द्रष्टा और दृश्य में एक सचेतन एकता है। यह स्वीकार किये बिना कि कण-कण में एक सार्वभौम एकता समान रूप से व्याप्त है, पदार्थों के प्रत्यक्ष ज्ञान की बात समझ में नहीं आ सकती। दो वस्तुओं में सम्बन्ध तभी स्थापित हो सकता है, जब कोई ऐसी निरपेक्ष सत्ता हो जो दोनों को संयोजित कर सके। प्रत्यक्ष ज्ञान की प्रक्रिया का सूक्ष्म विश्लेषण करने से इस सत्य का पता चलता है कि द्रष्टा और दृश्यद्वद्वदोनों ही एक सार्वभौम चेतना के रूप हैं।

संसार का जो स्वरूप हम अनुभव करते हैं, वह अलग-अलग व्यक्तियों के मन के भिन्न-भिन्न स्वभावों के अनुरूप होता है। जब हम किसी पदार्थ को भोगते या उसका अनुभव करते हैं, तब हम उस पर कुछ सापेक्ष गुण आरोपित कर देते हैं। उस वस्तु के साथ मन का जो सम्बन्ध होता है, उस पर आधारित कुछ प्रतिक्रियाएँ मन करता है। इसी प्रतिक्रिया की सहायता से उपर्युक्त आरोपण की क्रिया होती है। यह पदार्थ और कुछ नहीं, ईश्वर या सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की अभिव्यक्ति का ब्रह्माण्डीय उपादान (सामग्री) है। इस प्रकार दो प्रकार के संसार हुएद्वद्वविषय जगत्, जिसका सृजन ब्रह्मा का सर्वव्यापक मन करता है और आन्तर जगत्, जिसकी सृष्टि व्यक्तियों के मन करते हैं।

दिशा-काल ज्ञेय और ज्ञाता (द्रष्टा) के दृष्टिकोणों से सापेक्ष हैं; उनके निरपेक्ष अर्थ नहीं हैं। जब मन का द्रष्टा-भाव शान्त कर दिया जाता है, तब दिशा और काल का अनुभव नहीं होता। विचारों के सह-अस्तित्व से बने सम्बन्धों से

दिशा का बोध होता है। इसी प्रकार विचारों के अनुक्रम से उत्पन्न सम्बन्धों से काल का बोध होता है। स्वयं सह-अस्तित्व तथा अनुक्रम भी विचार हैं। इसलिए व्यक्ति की विचार-प्रक्रिया के रूप में आत्मपरक हो कर तथा ब्रह्मा की महत् इच्छा के रूप में विषयपरक हो कर कार्य करने वाले मन से स्वतन्त्र संसार का कोई अस्तित्व नहीं है। संसार के कालिक (Temporality) तथा त्रिविम (Spatiality) तत्त्व, उसकी नियमितता तथा विषयनिष्ठता उतने ही वास्तविक हैं जितने कि स्वप्नावस्था के (यही) तत्त्व। जिस प्रकार जाग्रतावस्था अदृश्य हो जाती है, उसी प्रकार ब्रह्म का अनुभव होने के पश्चात् जाग्रतावस्था लुप्त हो जाती है।

ब्रह्माण्ड की सापेक्षता का अर्थ यह है कि अनेक संसार हैं और संसारों के अन्दर भी बहुत से संसार हैं। ये संसार अन्य संसारों में व्याप्त हो रहे हैं, परन्तु एक संसार को दूसरे के अस्तित्व का ज्ञान नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति अपने ही मन की चिन्तन-प्रक्रिया के घेरे में कैद है, अतः प्रतिक्रियाओं के किसी विशेष समूह की सीमाओं से बाहर स्थित अन्य संसारों के अस्तित्व का उसे पता नहीं चल सकता। संसारों की संख्या असीमित है। अनन्तता अनन्तता के अन्दर गतिशील है। परन्तु ये संसार एक ही सामग्रीह्वह्वमन (वैयक्तिक और ब्रह्माण्डीय)ह्वह्वसे बने हैं। इनकी अन्तर्वस्तु तथा संघटन अलग-अलग हैं। यद्यपि कुछ संसारों के ये तत्त्व लगभग समान हैं, परन्तु अधिकांशतः उन तत्त्वों में इतना विभेद है कि उन संसारों में बिलकुल अलग-अलग प्रकार के मानवों के रहने की सम्भावना है। हमारे मन की वर्तमान स्थिति उन मानवों की भली प्रकार से कल्पना भी नहीं कर सकती। संसार का विकास ब्रह्म के मन से प्राप्त संवेगों के कारण निरन्तर होता रहता है। व्यक्तियों में भी सृष्टि की प्रक्रिया चलती रहती है, यद्यपि विकृत रूप में तथा ब्रह्मा की मूल संकल्प-शक्ति के बिलकुल विपरीत।

मृत्यु के बाद का जीवन

जीवन की सापेक्षता से इस तथ्य का पता चलता है कि किसी भी पदार्थ की कामना से सन्तोष नहीं मिल सकता। वस्तुओं की सापेक्षता का अर्थ है कि किसी भी वस्तुगत रूप के ढाँचे में स्थायित्व नहीं है। अतः प्रत्येक प्रकार की कामना किसी 'असम्भव' को प्राप्त करने के प्रयत्न के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। पदार्थों से सन्तुष्टि नहीं मिल सकती, क्योंकि वे स्थायी वस्तुएँ नहीं हैं। वे मात्र स्थितियाँ या अनुभव के सन्दर्भ हैं। शरीर जीवित रहे, इसकी इच्छा इस भ्रम के कारण है कि केवल वैयक्तिकता ही सत्य है। शरीर ही यथार्थता हैह्वह्वइस भ्रान्ति के कारण यह गलत धारणा बन जाती है कि सांसारिक पदार्थ भोगने या विभिन्न प्रकार से उपयोग करने के लिए हैं।

सम्यक् ज्ञान पर आधारित विचारधारा यह है कि संसार और इसकी अन्तर्वस्तु का उपयोग व्यक्ति के स्वार्थों की पूर्ति के साधन के रूप में नहीं करना चाहिए। परन्तु झूठे दर्प के आवेश में व्यक्ति परम सत्ता के कार्यों में हस्तक्षेप करने लगता है और उस (अज्ञानी व्यक्ति) का सत्यानाश हो जाता है। अधूरी कामनाएँ कारण-कार्य-सम्बन्ध द्वारा नियन्त्रित अनेक जन्मों की शृंखला के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। शरीर का अवसान वैयक्तिकता के रूप का परिवर्तन है, अतः इससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। यदि मृत्यु का अर्थ स्वयं की गतिविधियों का अन्त हो जाना है, तब मृत्यु का सहर्ष स्वागत करना चाहिए। तब यह जीवन के समस्त दुःखों को एक-साथ ही नष्ट कर देगी।

यदि मृत्यु क्रम-विकास की एक प्रक्रिया है, तब भी इसका स्वागत किया जाना चाहिए, क्योंकि पूर्णता प्राप्त करने के लिए आत्मा का क्रम-विकास एक अपेक्षित स्थिति है। शारीरिक मृत्यु से आत्मा की मृत्यु नहीं होती। (मृत्यु के बाद) भौतिक शरीर को छोड़ कर आत्मा (मन, इन्द्रियों और प्राणों से युक्त) आतिवाहक शरीर के साथ विचरण करती है। मृत्यु के समय की अचेतनता की स्थिति समाप्त होने के बाद कामनाओं से निर्मित आतिवाहक शरीर (सूक्ष्म शरीर) से सज्जित आत्मा जिस संसार में जन्म लेती है, उससे अभिज्ञ हो जाती है। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है, जब तक आत्मा सत्ता-सामान्य (निरपेक्ष, निरुपाधिक सत्) का साक्षात्कार नहीं कर लेती। यह साक्षात्कार मोक्ष है जो शाश्वत सत्ता में नाम-रूप का उत्कर्ष है।

कर्म-सिद्धान्त (जो असत् कर्मों के कारण होने वाली प्रतिक्रियाएँ हैं) के प्रभावी रहने के कारण ही जन्म और मृत्यु होते हैं। स्वार्थपरता परम सत्ता से पृथक्कृत विशिष्टीकृत अस्तित्व का परिणाम है। यद्यपि इस प्रकार का पृथक्करण वास्तव में सम्भव नहीं होता, परन्तु कल्पना इसके अस्तित्व पर विश्वास कर लेती है और व्यक्ति के लिए एक अवास्तविक बन्धन उत्पन्न कर देती है। अतः मोक्ष का अर्थ सही ढंग से पुनर्चिन्तन करना तथा परम सत्ता के साथ स्वयं के अभिन्न होने की चेतना में स्थित रहना है। वैश्व मन जिसे ब्रह्मा या सृष्टिकर्ता की संज्ञा दी गयी है, की क्रिया के कारण दृश्य जगत् के परम तत्त्व से आविर्भूत हो कर उसी में तिरोभूत हो जाने की प्रक्रियाएँ ही क्रम-विकास तथा अन्तर्वलय हैं।

परम तत्त्व

परम सत्ता को (तत्त्व को) सही-सही वर्णित करना असम्भव है; क्योंकि सभी प्रकार के वर्णन किसी-न-किसी रूप की अवधारणा करते हैं। इससे द्वैत-भावना उत्पन्न होती है जो परम सत्ता का लक्षण नहीं है। हम नहीं कह सकते कि परम सत्ता यह या वह (पदार्थ) है तथा उसका अमुक स्वभाव है। परम सत्ता की प्रत्येक परिभाषा में उसे अयथार्थ प्रकार से एक बाह्य अथवा मूर्त रूप दे कर एक 'दूसरा' तत्त्व बना दिया जाता है, जिसे जाना-समझा जा सकता है। परन्तु जिस प्रकार मन किसी वस्तु को सोच-समझ लेता है, उसके विपरीत परम तत्त्व को 'जाना' नहीं जा सकता। उसका एक कामचलाऊ वर्णन यही हो सकता है कि वह सर्वव्यापी, सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान् है। वह समरूप (अभिन्न), सत्, चित् तथा आनन्दघन है। यद्यपि वह हर स्थान पर है; परन्तु अदृश्य है, क्योंकि वह पदार्थ नहीं है। वह प्रत्येक प्राणी में सारभूत द्रष्टा या आत्मा के रूप में उपस्थित रहता है। यद्यपि वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का उद्गम है, प्रत्येक वस्तु उसके द्वारा पोषित है तथा सभी वस्तुएँ अन्ततः उसी में लय हो जाती हैं, तथापि वह अत्यन्त सूक्ष्म है।

मोक्ष का साधन

सतत भागवती चेतना ही ब्रह्म-साक्षात्कार अथवा आध्यात्मिक स्वतन्त्रता की चरमावस्था है। इस अवस्था को प्राप्त करने के प्रयत्न में झूठे तप-त्याग की कोई उपयोगिता नहीं है। यद्यपि साधक को गुरु से मार्ग-निर्देशन प्राप्त हो सकता है; परन्तु आध्यात्मिक जीवन तो स्वयं उसे ही जीना होगा। परम तत्त्व का साक्षात् अनुभव अथवा ज्ञान ही मोक्ष का एकमात्र साधन है। प्रत्येक वस्तु में ब्रह्माभ्यास (परम तत्त्व की उपस्थिति पर सतत चिन्तन-मनन) करना, केवल उसी के बारे में सोचना, केवल उसी के बारे में चर्चा करना, केवल उसी के बारे में बोलना, अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए केवल उसी पर निर्भर रहना ही सर्वोच्च साधना है। यही ज्ञान-मार्ग है।

दूसरी विधि है योग द्वारा मन पर नियन्त्रण (चित्त-वृत्ति-निरोध) स्थापित करना तथा प्रत्याहार के द्वारा बाह्य पदार्थों की ओर जाती हुई चित्त-वृत्ति को परम तत्त्व की ओर मोड़ देना। तीसरी विधि है प्राणायाम द्वारा प्राण-शक्ति का नियमन (प्राण-निरोध) करके उच्च स्तरीय ध्यान के लिए मन के क्रिया-कलापों को धीरे-धीरे नियन्त्रित करना।

(अनूदित)

जीवन भगवान् (जो हमारे अस्तित्व के शाश्वत स्रोत हैं) की दिशा में की जाने वाली एक पवित्र तथा आनन्दप्रद गति है। हमारा जीवन दिव्य सार-तत्त्व के साथ हमारे सतत आध्यात्मिक सम्बन्ध की एक अभिव्यक्ति है। भगवन्नाम-जप तथा भगवान् का स्नेहिल स्मरण इस आन्तरिक सम्बन्ध को पुनः स्थापित करने का मर्म है। जो-कुछ भी आप करें, उसे भगवान् को समर्पित कर दें। अपना जीवन ही 'उन्हें' समर्पित कर दें। परमानन्द प्राप्त करने एवं निर्भय, मुक्त तथा धन्य होने की यह एक कुंजी है।

स्वामी चिदानन्द

ब्रह्मचर्य-साधना :

स्वप्नदोष तथा वीर्यपात १

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

बहुत से नवयुवक स्वप्नदोष तथा वीर्यपात से पीड़ित हैं। इस भीषण रोग, वीर्यपात ने उन अनेक प्रतिभाशाली युवकों के हृदय के सारभाग को ही खा डाला है जो अपने शैक्षिक जीवन के प्रारम्भिक चरणों में किसी समय बड़े होनहार छात्र थे। इस भयानक कशाघात ने अनेक छात्रों तथा वयस्क लोगों तक की भी जीवन-शक्ति अथवा सत्त्व को निचोड़ लिया है और उन्हें शारीरिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक दिवालिया बना दिया है। इस घातक अभिशाप ने बहुत से युवकों के विकास को अवरुद्ध कर दिया है, जिससे उन्हें अपने अतीत की अज्ञान-भरी बुरी आदतों पर रोना आता है। इस अधम बीमारी ने कितने ही युवकों की आशाओं पर पानी फेर दिया है तथा उन्हें निराश, विषण्ण, नष्ट-स्वास्थ्य तथा जर्जरित शरीर-गठन वाला बना दिया है।

मेरे पास यौवन को अपव्यय तथा नष्ट किये जाने की कारुणिक कहानियों के बहुसंख्यक पत्र आते हैं। भारत तथा पश्चिमह्नह्वदोनों के ही ग्राम्य, निकम्मे और कामोद्दीपक साहित्य तथा अश्लील चल-चित्रों की वृद्धि की दिशा में हाल में झुकाव ने विभ्रान्त युवकों की विपत्ति को और भी बढ़ा दिया है। वीर्य-शक्ति की क्षति उनके मन में महान् भय उत्पन्न करती है। शरीर अशक्त बन जाता है, स्मृति क्षीण हो जाती है, मुख कुरूप हो जाता है तथा नवयुवक लज्जावश अपनी दशा को सुधार नहीं सकता है। किन्तु निराशा का कोई कारण नहीं है। यदि दिये हुए सुझावों में से कुछ इने-गिने सुझावों का भी पालन किया जाये, तो उसकी जीवन के प्रति यथार्थ दृष्टि विकसित होगी तथा वह अनुशासित आध्यात्मिक जीवन यापन करेगा और अन्त में परमानन्द को प्राप्त करेगा।

दैहिकीय वीर्यपात तथा व्याधिकीय वीर्यपात में भेद

वीर्यपात अनैच्छिक वीर्यस्राव है। शुक्रपात, वीर्यपात, वीर्यस्खलन, स्वप्नदोष, रेतःक्षरण और निषेकह्नह्वये सभी पर्यायवाची शब्द हैं। आयुर्वेद के वैद्य इसे शुक्र-मेघ रोग कहते हैं। यह युवावस्था में कुटेवों के कारण होता है। गम्भीर रोग की अवस्था में दिन के समय भी वीर्यपात होता है। रोगी के मूत्रोत्सर्जन-काल में मूत्र के साथ वीर्य का स्राव भी होता है। यदि स्राव यदा-कदा होता है, तो आपको किंचित् भी सन्त्रस्त होने की आवश्यकता नहीं है। यह शरीर में ताप अथवा वीर्य की थैलियों पर बोझिल आँतों तथा मूत्राशय के दबाव के कारण हो सकता है । यह व्याधि नहीं है।

वीर्यपात दो प्रकार का होता है, यथा दैहिकीय वीर्यपात तथा व्याधिकीय वीर्यपात। दैहिकीय वीर्यपात में आपको नयी स्फूर्ति प्राप्त होगी। इस क्रिया से आपको भयभीत नहीं होना चाहिए। यदि वीर्यपात यदा-कदा ही होता है, तो आपको उस ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। आपको इस विषय में चिन्ता नहीं करनी चाहिए। यह भी तन्त्र का किंचित् प्रधावन अथवा जिस पात्र में वीर्य संचित रहता है, उसमें समय-समय पर सामान्य उफान है। इस क्रिया के साथ दुर्विचार नहीं रहता है। व्यक्ति रात्रि में घटित इस क्रिया से अवगत नहीं रहता। इसके विपरीत, व्याधिकीय वीर्यपात के साथ कामुक विचार होते हैं। उसके पश्चात् उदासी आती है। उसमें चिड़चिड़ापन, अवसाद, आलस्य तथा कार्य करने और अनन्यमनस्कता में असमर्थता होती है। यदा-कदा होने वाला वीर्यपात प्रभावहीन होता है; किन्तु बारम्बार होने वाला वीर्यपात उत्साहहीनता, दुर्बलता, अग्निमान्द्य, उदासी, स्मृतिलोप, पृष्ठदेश में दुस्सह पीड़ा, शिरोवेदना, नेत्रों में जलन, निद्रालुता, लघुशंका तथा

वीर्यस्राव के समय दाह उत्पन्न करता है। वीर्य बहुत पतला हो जाता है।

कारण तथा परिणाम

स्वप्नदोष तथा वीर्यपात के कई कारण हो सकते हैं यथा मलावरोध, बोझिल उदर, उत्तेजक तथा वायुकारक भोजन, अशुद्ध विचार तथा अज्ञानतावश दीर्घ काल तक किया गया हस्तमैथुन।

यदि धातुक्षीणता, वीर्यपात, कामुक स्वप्न तथा नैतिक जीवन के अन्य प्रभावों की उपयुक्त औषधियों द्वारा रोकथाम न की गयी, तो ये निश्चित ही व्यक्ति को दुःखद जीवन की ओर ले जायेंगे। परन्तु ये औषधियाँ स्थायी रोग-मुक्ति नहीं दिला सकती हैं। व्यक्ति जब तक औषधियों का सेवन करता है, तब तक उसे अल्पकालिक राहत मिलती है।

पाश्चात्य डाक्टर भी यह स्वीकार करते हैं कि ऐसी औषधियाँ स्थायी रोग-मुक्ति नहीं दे सकती हैं। ज्यों-ही औषधियों का सेवन बन्द किया कि रोगी अपने रोग को अधिक बदतर दशा में अनुभव करता है। कुछ स्थितियों में औषधियों के सेवन से रोगी क्लीव बन जाता है। स्थायी सफल रोग-मुक्ति तो एकमात्र प्राचीन योग-प्रणाली से ही हो सकती है। **''नास्ति योगात्परं बलम्''** ह्ठयोग से बढ़ कर कोई बल नहीं है।

कठ वैद्यों तथा कूट चिकित्सकों के शानदार विज्ञापनों से अत्यधिक प्रभावित न हों। सरल प्राकृतिक जीवन यापन करें। आप शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो जायेंगे। आप इन तथाकथित एकस्वकृत औषधियों तथा अमोघगुण औषधियों को क्रय करने में धन व्यय न करें। वे निरर्थक हैं। कठ वैद्य विश्वासशील तथा अज्ञानी लोगों का शोषण करने का प्रयास करते हैं। डाक्टरों के पास न जाइए। अपना डाक्टर स्वयं बनने की योग्यता प्राप्त करने का प्रयास कीजिए। प्राकृतिक नियमों, स्वास्थ्य-विज्ञान तथा आरोग्य के सिद्धान्तों को जानिए। स्वास्थ्य के नियमों का उल्लंघन न कीजिए।

(अनूदित)

सेवा

सेवा के लिए पूर्ण समर्पित जीवन जियें। अपने हृदय में सेवा के लिए उत्कण्ठा तथा उत्साह भरें। दूसरों के लिए वरदान-स्वरूप हो कर जियें। इसके लिए आपको अपना मन परिष्कृत करना होगा, अपना चरित्र चमकाना होगा, अपना चरित्र ढालना अथवा निर्माण करना होगा तथा सहानुभूति, स्नेह, परोपकारिता, धैर्य और नम्रता का विकास करना होगा। दूसरों के विचार यदि आपसे भिन्न हों, तो उनसे झगड़ें नहीं। मन कई प्रकार के होते हैं। विचार-शरणि भी विविध प्रकार की होती है। प्रामाणिक मतभेद हुआ करते हैं। प्रत्येक की अपनी-अपनी राय हुआ करती है और सब अपने दृष्टिकोण से सही हैं। उनकी दृष्टि के साथ मेल साधें। उनकी राय को भी सहानुभूति और ध्यान से सुनें और उसे भी स्थान दें। अपने अहंकार के संकीर्ण वृत्त को छोड़ कर बाहर आयें और विशाल दृष्टि अपनायें। उदार दृष्टि से काम लें। सबके दृष्टिकोण को स्थान दें, तभी अपने को विशाल बना सकेंगे और हृदय को विकसित कर सकेंगे। मृदुता, मधुरता और शिष्टता के साथ बात करें। कम बोलें। अवांछित विचारों और भावनाओं को दूर करें। गर्व और उत्तेजना का लेशमात्र भी न रहने दें। अपने को पूर्णतया भूल जायें। वैयक्तिक तत्त्व या भावना की रत्ती-भर छाप न रहने दें। सेवा के लिए पूर्ण समर्पण आवश्यक है। यदि आप उपर्युक्त गुणों से सन्नद्ध हों, तो सामान्य रूप से जगत् के प्रकाश-स्तम्भ तथा दुर्लभ वरदान हैं। निश्चित ही आप ऐसा रमणीय पुष्प हैं जिसकी सुरभि इस समूचे विश्व में सर्वत्र प्रवेश कर जायेगी और छा जायेगी।

स्वामी शिवानन्द

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

सामान्य ज्ञान-५

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

मनुष्य

संसार में मनुष्य सबसे अधिक श्रेष्ठ और महान् प्राणी है। वह चमत्कारों का चमत्कार है। वह अपने-आपमें एक छोटा संसार है। वह ईश्वर की मूर्ति है। सार-रूप में वह ईश्वर ही है।

वही एक ऐसा प्राणी (सामाजिक पशु) है जो हँसता है, रोता है, चलता है और भला-बुरा समझता है। संसार में जितने प्राणी हैं, उन सबका वही एकमात्र नायक तथा शासक है।

खाना और सोनाह्नह्नये दो बातें मनुष्य और अन्य प्राणियों में समान हैं; लेकिन मनुष्य दिव्य ज्ञान पाता है और खुद ईश्वर बनता है।

उत्तम बातें

आत्मा का ज्ञान ही उत्तम विद्या है। मन पर विजय प्राप्त करना ही उत्तम विजय है। आत्मा का नाद या अनहद नाद ही उत्तम संगीत है। प्रसन्नता ही सर्वोत्तम औषधि है।

अपनी इन्द्रियों और मन के साथ संग्राम ही सर्वोत्तम संग्राम है। सर्वोत्तम विज्ञान आत्म-विज्ञान है। सर्वोत्तम वैद्य उपवास है। सर्वोत्तम तत्त्वज्ञान दूसरों की हिंसा न करना है। मध्यम मार्ग ही सर्वोत्तम नियम है।

निष्काम सेवा ही सर्वोत्तम गणित है, जो सुख को दूना करता है और दुःख को घटा देता है। सर्वोत्तम इंजीनियरी मृत्यु-नदी के ऊपर ईश्वर तक श्रद्धा का पुल बाँधना है। सर्वोत्तम कला सुरीले स्वर में महामन्त्र का उच्चारण है। उत्तम स्वाध्याय है 'मैं कौन हूँ' का अनुसन्धान करना और सांसारिक बन्धनों से मुक्त होना।

मनुष्य श्रेष्ठ है

सब प्राणियों से मनुष्य श्रेष्ठ है, क्योंकि उसमें ज्ञान है। वह जानता है कि सही क्या है, गलत क्या है और भला क्या है, बुरा क्या है।

वह जहाजों से बड़े सागर को पार कर सकता है और वायुयान से आकाश में उड़ सकता है। सागर में डुबकी लगा सकता है। वह दूर बैठे साथियों से बातें कर सकता है।

वह महायोगी या पण्डित बन सकता है। उसके पास तर्क, अन्वेषण, विवेचना और चिन्तन-मनन करने की शक्ति है।

हिन्दू-धर्मग्रन्थ

हिन्दू-धर्मग्रन्थ छह हैं : श्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराण, आगम और दर्शन।

श्रुति के अन्तर्गत चार उपवेद, छह आगम और चार वेद हैं। इन वेदों के अन्तर्गत संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् हैं।

मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, पाराशरस्मृति आदि कई स्मृतियाँ हैं।

रामायण, योगवासिष्ठ, महाभारत, हरिवंश इत्यादि इतिहास हैं। कुल अठारह पुराण हैं। सबसे प्रमुख पुराण भागवत है। इनके अतिरिक्त और भी कई छोटे-छोटे पुराण हैं।

पूजा के विधान आगम कहलाते हैं। पांचरात्र-आगम सबसे अधिक प्रसिद्ध है। तन्त्र-शास्त्र आगम के अन्दर ही है।

न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्तह्नह्नये छह दर्शन हैं। सभी दर्शनों में बादरायण का वेदान्त प्रमुख है।

इन सबमें पूरा हिन्दू-धर्म समाया हुआ है।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

बाल-स्तम्भ :

भजन और सेवा दोनों साथ-साथ

स्वामी रामराज्यम्

(१)

भगवान् बुद्ध अपने दो शिष्यों के साथ एक गाँव में प्रवास कर रहे थे। एक दिन की बात है। शाम का समय हो गया। उनके दोनों शिष्य ध्यान करने के लिए आँखें बन्द करके बैठ गये। अचानक एक शिष्य के पेट में पीड़ा होने लगी। वह कराहने लगा। दूसरा शिष्य आँखें बन्द किये हुए बैठा रहा। भगवान् बुद्ध ने शिष्य के कराहने की आवाज सुनी। वह उसके पास आये। उसके उपचार की व्यवस्था की तथा उसके पास बैठ गये। तभी दूसरा शिष्य ध्यान समाप्त करके उन्हें प्रणाम करने के लिए आया। उन्होंने उससे पूछाह्वह्व''तुम्हें इसके कराहने की आवाज सुनायी पड़ी थी?''

''हाँ, भन्ते।''

''फिर तुम इसके पास क्यों नहीं आये?''

''मैं कैसे आता? मैं ध्यान कर रहा था।''

भगवान् बुद्ध गम्भीर हो गये। बोलेह्वह्व''किसी की पीड़ा को अनदेखा करके ध्यान करना कोई ध्यान है? तुम अभी इसी समय मेरा साथ छोड़ कर अन्यत्र चले जाओ।''

(२)

एक सन्त अपनी मृत्यु के बाद वहाँ पहुँचे जहाँ चित्रगुप्त उनके पाप-पुण्य का लेखा देख रहे थे। उन्होंने सन्त से पूछाह्वह्व''आपने कौन-कौन से पुण्य किये हैं?''

सन्त ने कहाह्वह्व''मेरा जीवन पुण्य करते हुए ही बीता है। मैंने एक निर्जन जंगल में एक गुफा में बैठ कर नित्यप्रति बीस-बीस घण्टों तक तपस्या की है।''

''हूँह्वह्व'' चित्रगुप्त ने कहा और उनके कर्मों का लेखा देखते हुए बोलेह्वह्व''फिर भी आपने कोई पुण्य कार्य नहीं किया। आपको याद होगा, एक बार अकाल पड़ गया था। लोग भूख और प्यास से मरने लगे थे। लेकिन आपने उनके दुःख पर कोई ध्यान नहीं दिया। आप तपस्या में ही लीन रहे। एक दिन अकाल-पीड़ित लोग आपके पास आये। किसी ने उनसे आपकी तपस्या का बखान किया था। उन्हें आशा थी कि आप भगवान् से प्रार्थना करके वर्षा करवा देंगे। वे आपकी गुफा के द्वार पर बहुत देर तक खड़े रहे लेकिन आपने आँखें तक नहीं खोलीं। इस पापकर्म के कारण आप भगवान् की कृपा प्राप्त करने के अधिकारी नहीं रहे।''

बच्चो, उपर्युक्त दोनों घटनायें एक ही सन्देश दे रही हैंह्वह्वसेवा के बिना भजन अधूरा है। भगवान् का भजन (ध्यान, तपस्या आदि) करना चाहिए, खूब करना चाहिए लेकिन दूसरों के दुःख को कभी भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। भजन और सेवा भगवान् की ओर ले जाने वाले रथ के दो पहिये हैं। दोनों पहियों को चलना चाहिएह्वह्वएक भी पहिया रुका कि भगवान् की ओर की जाने वाली यात्रा भी रुक जायेगी। □□□

भगवत्स्मरण ही जीवन है। भगवान् का विस्मरण ही मृत्यु है। भगवान् में श्रद्धा तथा 'उनके' प्रति भक्ति इस संसार का सर्वाधिक मूल्यवान् खजाना है। भक्ति-विहीन जीवन नीरस, निस्सार तथा निरर्थक है। भगवन्नाम से महान् कोई खजाना नहीं है। धर्म या चरित्र से बड़ी कोई सम्पत्ति नहीं है। धर्म आपको भगवान् की ओर ले चलता है और केवल भगवान् में ही आपको वास्तविक सुख-शान्ति तथा परमानन्द प्राप्त होते हैं। सुख पाने के लिए आपको भगवान् को प्राप्त करना होगा। इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं है। यही एकमात्र उपाय है, यही सत्य है।

स्वामी चिदानन्द

एक उपहार गुरुदेव के लिए

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

उस दैवी सत्ता के लिए श्रद्धास्पद श्रद्धांजलि जो सर्व-व्यापक, अन्तर्यामी, शाश्वत सत्य है। वही अपरिवर्तनशील, अनश्वर, अक्षय आत्मा हैं जिनके पीछे और उनसे परे यह सदा परिवर्तनशील, अस्थायी और नश्वर प्रपंच का प्रवाह है। यह विश्व जिसे हम सच्चा मानते हैं, वह एक नाम और रूपों में नष्ट होने वाला क्षणभंगुर प्रपंच है।

हम उस सत्ता को प्रणाम करते हैं जो इस बाह्य दृश्य जगत् के पीछे निहित उसका आधार है, जैसे कि चलचित्र का परदा जिस पर चित्र दिखाये जाते हैं, वह क्षणिक चित्रों का आधार है। उस पर पड़ती हुई छाया बड़ी सत्य लगती है, वह दर्शकों को अपने आकर्षण में बाँधे रखती है। दर्शक उससे भ्रमित होने के लिए खर्च करके वहाँ जाते हैं। पर इस अनित्य छाया के खेल का कोई आरम्भ भी है और अन्त भी है तथा सदा परिवर्तनशील भी है, जब कि परदा सदा एक-सा बना रहता है। यह आरम्भ में था और अन्त में रहेगा तथा यह ऐसा ही बना भी रहेगा, किन्तु दर्शक चित्र देखने में ऐसे डूबे रहते हैं कि इन्हें अपनी भी सुध-बुध नहीं रहती तथा इनका ध्यान परदे के ऊपर तो जाता ही नहीं। उस महान् अन्तर्यामी, सर्वव्यापक, नित्य उपस्थित सत्य को श्रद्धा के साथ प्रणाम !

गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की आध्यात्मिक उपस्थिति के लिए प्रेममयी श्रद्धांजलि। उन्होंने हमें अप्रत्यक्ष ज्ञान के प्रति जागरूक बनाया। उन्होंने हमारे अन्तर्चक्षुओं को खोल कर हमें सत्य को पहचानने के योग्य बनाया। निश्चित रूप से इस प्रकार की जागरूकता गुरु की महान् अनुकम्पा से ही प्राप्त होती है। उन्होंने अज्ञान में सोये हुओं को जगा कर, हमें इस परिवर्तित रूप-रंग के पीछे छिपे सत्य को देखने योग्य बनाया। गुरु ही ऐसे व्यक्ति हैं जो सच्चे साधक, जिज्ञासु, मुमुक्षु योगी की सर्वोच्च भलाई और उसके सर्वोच्च कल्याण की गहराई से कामना करते हैं।

वर्ष में आषाढ़ पूर्णिमा के दिन गुरुपूर्णिमा आती है। उस दिन समस्त भारत में सहज रूप से यात्रा करके अपने गुरु के पास या गुरु-स्थान पर शिष्य पहुँचते हैं। वह गुरु के निकट बैठ कर अपनी इच्छा की पूर्ति करते हैं। उन्हें श्रद्धा के साथ भेंट देते हैं तथा उनसे उद्दीपक (जीवद्) अन्त:प्रेरणा प्राप्त करते हैं जिससे उन्हें दु:ख से परे शाश्वत आनन्द के साम्राज्य तथा अन्धकार से परे प्रकाश के साम्राज्य की यात्रा के लिए नूतन प्रेरक शक्ति प्राप्त होती है।

उन्होंने जो-कुछ गुरु से पाया है, उसके लिए अपनी कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए, आभार प्रकट करने के लिए वे मूर्त रूप में अपनी श्रद्धा प्रकट करने की इच्छा भी रखते हैं। वे उसे गुरु-दक्षिणा कहते हैं, एक विशिष्ट भेंट जो गुरु को देना चाहते हैं। अब गुरु-दक्षिणा क्या है, जो गुरु को विशेष रूप से प्रसन्न करेगी?

एक गुरु गुरु-दक्षिणा के रूप में अपने शिष्य से निश्चित रूप में यही चाहता है कि अपनी साधना में सच्चा और गम्भीर होने के नाते आध्यात्मिकता के महान् आदर्शह्लत्याग, विरक्ति, विवेक, अभ्यास, आध्यात्मिक साधना आदि के प्रति अपने-आपको वह पुन: समर्पित कर दे। अपने आदर्शों के प्रति गहन भक्ति और पूर्ण रूप से कृतसंकल्प, गुरु के दर्शाये हुए पथ पर दृढ़-संकल्प हो कर दृढ़ता के साथ आगे बढ़े। हम प्राचीन सन्तों के वंशज हैं। उन्होंने जिन आदर्शों को हमारे सामने रखा है, उनका पालन करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंह्लयही गुरु-दक्षिणा के रूप में गुरु अपने शिष्य से चाहता है।

इस सन्दर्भ में हमें एक प्राचीन कहावत याद आती हैह्वह्व''चिकित्सक, अपने-आपको निरोगी करो।'' सर्व प्रथम, अपने कार्य से प्रारम्भ करो, जहाँ तुम हो, अपने भीतर, नवीनीकरण हेतु कार्य करो, पुनर्जन्म के लिए कार्य करो, अपने ही भीतर एक नयी शक्ति के जागरण हेतु कार्य करो। एक नया मन, नवीन हृदय, आभ्यन्तर में एक नया व्यक्ति।

गुरुपूर्णिमा का महत्त्व इसलिए भी है कि अपने नवीनीकरण का यह एक अवसर है। एक प्रसिद्ध पक्षी है जिसे स्वप्निल कहते हैं। विशेषकर प्राचीन मिस्र में उसे सूर्य की पुजारिन के रूप में जाना जाता था। ऐसा माना जाता है कि एक समय में एक ही स्वप्निल का अस्तित्व होता है, जो करीब-करीब पाँच सौ वर्षों तक जीवित रहती है। अपने-आपको स्थायी बनाने के लिए, अपना अण्डा सेने के लिए यह अपना घोंसला नहीं बनाती है। पर घोंसले के बदले सुगन्धित डालियों की एक सुगन्ध युक्त चिता की अग्नि प्रज्वलित करके उसके ऊपर अपना अण्डा देती है। यह लपटों में ही नष्ट हो जाता है। पर वह दीखता ऐसा ही है, पर देखते-ही-देखते उस भस्मीभूत राख में से एक चमकता हुआ नया स्वप्निल पक्षी रहस्यमय रूप से निकल आता है।

इस पक्षी के विषय में इस प्राचीन विश्वास का हर एक आध्यात्मिक साधक के लिए एक गहरा अर्थ है। जो अपने पुराने स्व की राख में से, जिसका आधार अनाध्यात्मिक आत्मा से है, जिसका सम्बन्ध अज्ञान से जुड़ गया है, जो इन्द्रियों के विषयों से आसक्ति और उसके भोग में लिप्त होता है, वह अपनी इच्छाओं के वशीभूत हो कर अपने शारीरिक व्यक्तित्व को, शारीरिक लक्षणों और मनोभावों को मूर्त रूप मान लेता हैह्वह्वउससे ऊपर उठ कर एक चमकदार नया व्यक्ति निकल कर आता है। पूर्व-व्यक्तित्व का विनाश होने पर, पूरी तरह से उसको नष्ट करके, समाप्त करते हुए, अपने-आपको पुनः उत्पन्न करके, अपना काम यहाँ से पुनः शुरू करो। गुरुदेव कहा करते थेह्वह्व''इस छोटे 'मैं' को नष्ट करो, जीने के लिए मरो, दिव्य जीवन यापन करो।'' निश्चित रूप से यही गुरु-दक्षिणा है। यह नवरत्नों से भी मूल्यवान् है, यह सोने और चाँदी से भी मूल्यवान् है। इस प्रकार की गुरु-दक्षिणा से गुरु प्रसन्न हो जायेंगे।

इसलिए गहराई से इस पर चिन्तन करो। इस महत्त्वपूर्ण, सार्थक और अत्यावश्यक विचार पर चिन्तन करो। इसे स्वयं से प्रारम्भ करो, एक नया व्यक्ति बन जाओ। स्वप्निल पक्षी की भाँति हो जाओ। इस नवीनीकरण से चमक उठो। इसे ही अपनी गुरु-दक्षिणा होने दो। ईश्वर भी प्रसन्न होंगे, गुरु भी आनन्दित हो उठेंगे और समस्त भ्रातृभाव को भी लाभ पहुँचेगा। इस सबसे ऊपर तुम भी अपनी ऐसी दक्षिणा दे कर बहुत लाभान्वित होगे।

परमात्मा और गुरु तुम्हें पूर्ण गम्भीरता और सच्चाई के साथ इस पर विचार करने के लिए प्रेरित करें। इस पर गम्भीरता से विचार करके उसे कार्य रूप में परिणत करो।

(अनुवादिका : श्रीमती आशा गुप्ता)

बहुसंख्यक लोगों का, यहाँ तक कि शिक्षित कहे जाने वाले व्यक्ति का भी, जीवन में कोई निश्चित लक्ष्य नहीं होता। फल यह होता है कि लोग इधर-उधर वैसे ही मारे-मारे फिरते हैं, जैसे समुद्र में एक लकड़ी का कुन्दा चपल लहरों के साथ निरवलम्ब इधर-उधर भटकता है। आज के जन-समुदाय को अपने कर्तव्य का यथार्थ ज्ञान नहीं है। बहुत से विद्यार्थी अपना बी. ए. तथा एम. ए. का अध्ययन समाप्त कर लेते हैं; पर आगे क्या करना है, इसका उन्हें पता नहीं रहता है। अपनी प्रकृति के अनुसार किसी अच्छे उद्यम को चुनने की शक्ति उनमें नहीं है जिससे उन्हें जीवन में अभ्युदय तथा सफलता की प्राप्ति हो। अतः वे आलसी बन जाते हैं तथा साहस के कार्य या किसी कार्य को; जिसमें कुशलता, चातुर्य और कुशाग्र बुद्धि की आवश्यकता है; करने के अयोग्य सिद्ध होते हैं।

स्वामी शिवानन्द

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के भक्तों के सादर निमन्त्रण पर द डिवाइन लाइफ सोसायटी के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज अपने साथ श्री नरसिंहुलु जी को ले कर १४ अप्रैल से ९ जून २०११ तक दक्षिण अफ्रीका एवं मॉरिशस की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक यात्रा पर गये।

श्री स्वामी जी महाराज तथा श्री नरसिंहुलु जी १४ अप्रैल को डर्बन पहुँचे जहाँ दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न 'स्वामी शिवानन्द केन्द्रों' के प्रतिनिधियों ने उनका भव्य स्वागत किया। १५ अप्रैल को पीटरमैरिट्ज़बर्ग में श्री प्रेम कान्तिलाल जी के निवास-स्थान पर एकत्रित भक्त-समुदाय के 'विशेष स्वागत सत्संग' में श्री स्वामी जी महाराज ने आशीर्वचन दिये। १६ अप्रैल को पीटरमैरिट्ज़बर्ग सिटि हॉल में आयोजित 'शिवानन्द शान्ति स्तम्भ-अनावरण-समारोह' में श्री स्वामी जी महाराज सम्मिलित हुए। इस विषय सम्बन्धी विस्तृत वर्णन 'दिव्य जीवन' पत्रिका के मई अंक में दे दिया गया है।

इसके बाद श्री स्वामी जी महाराज 'आदिशंकराश्रम' के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए एक सप्ताह के लिए जौहन्सबर्ग गये। वहाँ श्री स्वामी जी महाराज ने १७ और १८ अप्रैल को विशेष रात्रि सत्संगों में भक्त-समुदाय को सम्बोधित किया। श्री स्वामी जी महाराज 'श्री भारत शारदा मन्दिर इन्डीपैंडैंस स्कूल' भी गये तथा वहाँ विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए 'सदाचार एवं नैतिक जीवन की आवश्यकता' पर प्रवचन दिया।

१९ अप्रैल को श्री स्वामी जी महाराज ने 'रिन्सूर्ड, ईस्ट रैंड' में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में प्रवचन दिया। २० अप्रैल को विष्णु मन्दिर, लौडियम में आयोजित सायंकालीन सत्संग में श्री स्वामी जी महाराज ने प्रवचन दिया। २१ अप्रैल को श्री स्वामी जी महाराज ने आश्रम में आयोजित 'विदाई सत्संग' में प्रवचन दिया तथा उसके बाद आनन्द कुटीर आश्रम, रौंडेबौश के निमन्त्रण पर वहाँ २२ अप्रैल से ७ मई की, दो सप्ताह की अवधि तक, ठहरने के लिए 'केपटाउन' की ओर प्रस्थान किया।

श्री स्वामी जी महाराज ने 'आनन्द कुटीर आश्रम' में आयोजित 'ईस्टर योग शिविर' में २३ से २५ अप्रैल तक भाग लिया तथा तीनों दिन श्रीमद्भागवतम् पर प्रेरणाप्रद प्रवचन दिये। श्री स्वामी जी महाराज ने निर्देशित ध्यान कक्षाएँ भी संचालित कीं तथा प्रश्नोत्तर सत्रों में भाग लेने वालों की बहुत-सी शंकाओं का भी निवारण किया। श्री स्वामी जी महाराज यहाँ के पूरे आवास-काल में नित्य प्रातः ध्यान के सत्र में उपस्थित रहे तथा सायंकाल में श्रीमद्भागवतम् पर प्रवचन देते रहे। श्री स्वामी जी महाराज ने दो विशेष प्रवचन 'वेद' तथा 'जीवन की आन्तरिक सम्बद्धता' विषयों पर आश्रम के योगवासिष्ठ अध्ययन के विद्यार्थियों को दिये। श्री स्वामी जी महाराज ने 'बाल शिविर' का संचालन करते हुए बच्चों को सम्बोधित किया।

७ मई को श्री स्वामी जी महाराज पाँच दिवसीय आवास हेतु दक्षिण अफ्रीका गये। द डिवाइन लाइफ सोसायटी दक्षिण अफ्रीका की स्थापना गुरुदेव से दीक्षित ब्रह्मलीन पूज्य श्री स्वामी सहजानन्द जी महाराज ने की थी। डी एल एस दक्षिण अफ्रीका द्वारा अभावग्रस्त समुदाय के लोगों के लिए विद्यालय, औषधालय एवं 'व्यवसाय-प्रशिक्षण केन्द्रों इत्यादि की स्थापना' जैसी ३०० से अधिक योजनाएँ आरम्भ की हुई हैं। दक्षिण अफ्रीका की गणतन्त्र सरकार तथा वहाँ की जनता द्वारा इस अकथनीय सेवा के लिए उसे अत्यधिक सराहना एवं सम्मान प्राप्त है।

दक्षिण अफ्रीका पहुँचने पर डर्बन हवाई अड्डे पर डी एल एस दक्षिण अफ्रीका की प्रबन्धन समिति के सदस्यों तथा अन्य भक्त जनों ने श्री स्वामी जी महाराज का हार्दिक स्वागत

किया। 'रैज़रवॉयर हिल्ज़' में अपने आवास-काल के दौरान श्री स्वामी जी महाराज डी एल एस दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न आश्रमों में गये तथा 'रैज़रवॉयर हिल्ज़', 'ला मरसी', 'स्टैंजर', 'रिचर्ड बे', 'ऐस्टकोर्ट' तथा 'पीटरमैरिट्ज़बर्ग' में होने वाले सत्संगों में प्रवचन भी दिये। श्री स्वामी जी महाराज डी एल एस दक्षिण अफ्रीका द्वारा चलायी गयी योजनाओं में से कुछेक को देखने गये तथा उनसे लाभान्वित होने वाले लोगों से भी मिल कर बातचीत की।

इसके उपरान्त श्री स्वामी जी महाराज ने एक सप्ताह के लिए मॉरिशस की यात्रा के लिए प्रस्थान किया। १२ मई को मॉरिशस पहुँचने पर हवाई अड्डे पर नेशनल टेलीविज़न ने श्री स्वामी जी महाराज का संक्षिप्त साक्षात्कार लिया। श्री स्वामी जी महाराज वहाँ पर पूज्य श्री स्वामी वेंकटेशानन्द जी महाराज द्वारा संस्थापित डी एल एस मॉरिशस शिवानन्द योग आश्रम में ठहरे। १३ मई को श्री स्वामी जी महाराज मॉरिशस की पावन गंगा झील, 'गंगातलाओ' के दर्शनार्थ गये तथा वहाँ भक्तों को प्रेरणाप्रद आशीर्वचन दिये। श्री स्वामी जी महाराज रामकृष्ण मिशन के श्री स्वामी कृष्णस्वरूपानन्द जी महाराज तथा चिन्मय मिशन के श्री स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज से भी मिले। श्री स्वामी जी महाराज मॉरिशस की कुछेक पावन-स्थलियों के दर्शन करने गये तथा आश्रम में सायंकालीन विशेष सत्संगों में उपस्थित भक्त-समूह को आशीर्वचन दिये। १५ मई को श्री स्वामी जी महाराज ने साप्ताहिक बाल-सत्संग में बच्चों को आशीर्वचन दिये। उसी सन्ध्या को श्री स्वामी जी महाराज ने माहेबर्ग में स्थापित सद्गुरुदेव की भव्य प्रतिमा को श्रद्धांजलि अर्पित की। १७ मई को श्री स्वामी जी महाराज मॉरिशस रिपब्लिक के प्रधान 'हिज़ एक्सीलेंसी' सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी से मिले। उन्होंने द डिवाइन लाइफ सोसायटी द्वारा किये जा रहे महान् सेवा-कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा आधुनिक युवा पीढ़ी को प्रेरित और निर्देशित करने वाले कार्यक्रमों का आयोजन करने का अनुरोध किया। सायंकाल में श्री स्वामी जी महाराज ने भगवान् वेंकटेश्वर मन्दिर में होने वाले सत्संग में उपस्थित भक्त-समुदाय को सम्बोधित किया। १८ की प्रातः श्री स्वामी जी महाराज ने वहाँ के एक सुप्रसिद्ध समाचार-पत्र को इन्टरव्यू दिया तथा सन्ध्या के समय विदाई सत्संग में भाग लिया। १९ मई को श्री स्वामी जी महाराज उत्तरी क्वाजुलु नैटाल, दक्षिण अफ्रीका के न्यू कैसल जाने के लिए मॉरिशस गये। वहाँ 'इन्टेग्रल योगा सैंटर' की शाखा में तीन दिन का कार्यक्रम था।

२० मई को श्री स्वामी जी महाराज ने शाखा के सदस्यों को विशेष स्वागत सत्संग में सम्बोधित किया। आगामी दिवस श्री स्वामी जी महाराज युवा लड़कों की जेल देखने गये तथा वहाँ के नवयुकों से अत्यन्त प्रेमपूर्वक वार्तालाप किया। इसके उपरान्त श्री स्वामी जी महाराज बाल-चिकित्सालय गये तथा वहाँ के बालरोगियों में फल एवं फलों का रस वितरित किया। सायंकाल में श्री स्वामी जी महाराज ने शाखा के सदस्यों को सम्बोधित किया। २२ मई को श्री स्वामी जी महाराज ने सार्वजनिक सत्संग में 'ध्यान' पर प्रवचन दिया। सायंकाल में श्री स्वामी जी महाराज ने शाखा द्वारा आयोजित विदाई सत्संग में शाखा-सदस्यों को सम्बोधित किया। २४ मई को श्री स्वामी जी महाराज ने 'एम्पैरुमल मन्दिर' में स्थित 'शिवानन्द हॉल' का औपचारिक उद्घाटन करने के लिए 'एम्पान्जनी' की ओर प्रस्थान किया। प्रार्थना तथा 'पट्टिका-अनावरण' के उपरान्त श्री स्वामी जी महाराज ने प्रेरणाप्रद सन्देश दिया।

'टौंगाट' की वेदान्त संस्था के प्रेमपूर्ण आमन्त्रण पर श्री स्वामी जी महाराज २८ मई को वहाँ गये तथा 'वीर भोग एम्पैरुमल मन्दिर' में हुए विशेष सत्संग में वहाँ उपस्थित भक्त-समूह को सम्बोधित किया। २९ मई को श्री स्वामी जी महाराज 'वैलवेडैच' में श्री स्वामी रामकृपानन्द के सर्वधर्म आश्रम गये तथा वहाँ विशेष सत्संग में बच्चों को सम्बोधित किया। सायंकाल में श्री स्वामी जी महाराज ने विश्वरूप मन्दिर, वेरूलम में भक्त-समुदाय को सम्बोधित किया। उसके

उपरान्त श्री स्वामी जी महाराज ने 'इन्टेग्रल योगा सैन्टर' की एक शाखा के आठ दिवसीय कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए पीटरमैरिट्ज़बर्ग की ओर प्रस्थान किया।

पीटरमैरिट्ज़बर्ग पहुँचने पर श्री स्वामी जी महाराज ने ३० मई को 'आन्ध्र महासभा हाल' में होने वाले स्वागत सत्संग में भक्तों को आशीर्वचन दिये। आगामी दिन श्री स्वामी जी महाराज ने श्री प्रेम कान्तिलाल के निवास पर आयोजित सत्संग में सम्मिलित हो कर श्रीमद्भागवतम् के 'कपिलोपदेश' पर प्रवचन दिये। १ जून को स्वामी जी महाराज ने महात्मा गान्धी जी की पावन-स्मृति से सम्बन्धित स्थानह्नपीटरमैरिट्ज़बर्ग का रेलवे स्टेशन देखा । इसके पश्चात् श्री स्वामी जी महाराज ने 'इन्टेग्रल योगा सैन्टर आश्रम' में पादुका-पूजन किया तथा 'धर्मग्रन्थों के अध्ययन के महत्त्व' के सम्बन्ध में प्रवचन दिया। आगामी प्रातः श्री स्वामी जी महाराज डर्बन में भक्तों के घर गये तथा सायंकाल में 'इन्टेग्रल योगा सैन्टर आश्रम' में प्रवचन दिये। ३ जून को स्वामी जी महाराज ने सायंकालीन सत्संग में आश्रम में एकत्रित भक्तों को वेदों के सम्बन्ध में प्रवचन दिया। 'हिन्दवानी कॉम्यूनिटी चैनल दक्षिण अफ्रीका रेडियो' पर एक 'इन्टरव्यू' में श्री स्वामी जी महाराज ने 'वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में शान्ति एवं प्रसन्नता के सम्बन्ध में श्री सद्गुरुदेव के सन्देश की सम्बद्धता' के विषय में बताया।

४ जून की प्रातः स्वामी जी महाराज डर्बन गये और वहाँ क्लेयर एस्टेट श्मशान में 'शिवानन्द शान्ति स्तम्भ' की स्थापना हेतु भूमि की खुदाई के समारोह में सम्मिलित हुए। सन्ध्या के समय श्री स्वामी जी महाराज ने 'एशो' में 'श्री गणपति कोविल' का उद्घाटन किया। तदुपरान्त श्री स्वामी जी महाराज पीटरमैरिट्ज़बर्ग आ गये और वहाँ 'इन्टेग्रल योगा सैन्टर आश्रम' में वेदों के सम्बन्ध में द्वितीय प्रवचन दिया। आगामी दिन स्वामी जी इन्टेग्रल योगा सैंटर द्वारा आयोजित एक शिविर में भाग लेने के लिए एलबर्ट हॉल में 'शिवानन्द फॉरैस्ट एकेडेमी गये और वहाँ ध्यान के विषय में प्रवचन दिया। श्री स्वामी जी महाराज ने उनके प्रश्नों के उत्तर भी दिये तथा ६ जून को 'पट्टिका अनावरण' करते हुए 'इन्टेग्रल योगा सैन्टर' का औपचारिक रूप से उद्घाटन भी किया। श्री स्वामी जी महाराज ने डा. धवराज के निवास पर पादुका-पूजन में भाग लिया तथा सन्ध्या-समय 'आन्ध्र सभा हॉल' में विदाई सत्संग में भक्तों को आशीर्वचन दिये।

परम पूज्य श्री स्वामी विमोक्षानन्द जी महाराज के अनुरोध पर श्री स्वामी जी महाराज ७ जून को श्री रामकृष्ण मठ गये तथा वहाँ उनके आश्रम में दोपहर का भोजन किया। बाद में सर्व धर्म आश्रम में एकत्रित भक्त-समुदाय को विशेष सत्संग में सम्बोधित किया। दक्षिण अफ्रीका के आवास-काल के दौरान श्री स्वामी जी महाराज जौहन्सबर्ग, केपटाउन, डर्बन, न्यू कैसल, टौंगाट एवं पीटरमैरिट्ज़बर्ग में विभिन्न भक्तों के निवास-स्थलों पर गये तथा वहाँ सत्संग संचालित किये। श्री स्वामी जी महाराज ८ जून को दक्षिण अफ्रीका से चले तथा ९ जून को मुख्यालय पहुँच गये। श्री स्वामी जी महाराज की दक्षिणी अफ्रीका तथा मॉरिशस की यात्रा ने सद्गुरुदेव के शान्ति एवं समरसता के सन्देश के प्रचार-प्रसार में अत्यधिक सहायता की तथा भक्तों के हृदयों में आध्यात्मिक तरंगों की पुनर्जागृति की।

दक्षिण अफ्रीका डी एल एस के बोर्ड ऑफ़ मैनेजमैंट की सेवाओं के लिए तथा श्री स्वामी शिवशंकरानन्द जी, श्री स्वामी विद्यानन्द जी, श्री स्वामी योगेश्वरी माता जी, पार्वतिनन्द माता जी, श्री स्वामी निश्चलानन्द जी, श्री स्वामी रामकृपानन्द जी, श्री स्वामी लोकसंग्रहानन्द जी, श्री ईश्वर रामलछमन जी, श्री प्रेम कान्तिलाल जी, डा. धवराज, श्री वाई. के. जानकी जी, श्री राना हरगोविन्द जी तथा दक्षिण अफ्रीका एवं मॉरिशस के अन्य भक्त जिन्होंने गुरुदेव के सन्देश के प्रचार-प्रसार के लिए विविध कार्यक्रम आयोजित किये, उन सबका दिव्य जीवन संघ मुख्यालय हार्दिक आभार प्रकट करता है। हमारी सर्वशक्तिमान् परमात्मा तथा सद्गुरुदेव से प्रार्थना है कि वे इन सब पर कृपा वृष्टि करें! * * *

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

श्री सद्गुरुदेव के गहन आशीर्वाद से द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय, लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित 'शिवानन्द होम' के माध्यम से विनम्र सेवा में निरन्तर संलग्न है। यह ऐसे आवास-विहीन रोगियों को चिकित्सीय सुविधाएँ उपलब्ध कराता है, जिन्हें बीमार होने के कारण भरती किये जाने की आवश्यकता है, किन्तु साधन-हीन होने के कारण विवश हैं।

ये बेघरबार लोग हमारे जैसे ही लोग हैं, केवल इनके स्वभाव और व्यवहार थोड़ा अलग होते हैं जिसका कारण इनकी सामाजिक परिस्थितियाँ हैं अथवा जीवन की सुरक्षा के लिए येन केन प्रकारेण स्वयं को बचाने की विवशता है। वास्तव में निज इच्छावश परिव्राजक जीवन अपना लेने वाले कुछेक लोगों को छोड़ कर शेष कोई भी व्यक्ति अपने घर-परिवार से टूट कर, अपने सामाजिक परिवेश से बिछुड़ कर 'निराश्रित', 'अज्ञात', 'अस्तित्व-विहीन' और 'आवास-विहीन' हो कर सड़क पर जीवन बिताना नहीं चाहता। भले ही जिसका यह चित्र खींचा गया है, वह अस्थाई तौर पर निराश्रित व्यक्ति रहा हो, क्योंकि 'निराश्रित' का अर्थ यह नहीं है कि हमेशा ही निराश्रित। उदाहरण के लिए इस माह 'शिवानन्द होम' में भरती होने वाले व्यक्ति को ही लेंह्वह्वजब उसे सड़क से उठा कर लाया गया तो वह ऐसी अवस्था में था कि स्वयं उठ भी नहीं सकता था। उसके हाथ-पाँव और चेहरे से रक्त बह रहा था। लगभग ६० वर्ष की आयु रही होगी। वह सम्भवतया पक्षाघात से ग्रसित रहा होगा, क्योंकि बोल पाने में भी वह असमर्थ था। कुछ सप्ताह की चिकित्सीय सुविधा एवं उपयुक्त आहार मिलने से वह अपनी कुपोषित अवस्था से उबरने लगा और फिर संकेत द्वारा उसने बताया कि वह 'अपने घर' जाना चाहता है। बोल पाने में असमर्थ होते हुए भी उसने काँपते हाथों से अपने गाँव का नाम लिख दिया और 'एम्बुलेंस' (अस्पताल-गाड़ी) में बैठाने पर संकेतों द्वारा अपने घर का रास्ता भी बता दिया, जहाँ वह प्रसन्नतापूर्वक सुस्वस्थ अवस्था में पहुँच गया। जय गुरुदेव!

इस माह आने वाले अन्य रोगियों में एक गुर्दे के रोग तथा फुफ्फुसीय तपेदिक का रोगी था। इसका इलाज यद्यपि दीर्घ काल तक चलने वाला है, तो भी आये दिन इसके स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है। यह सब उन सर्वशक्तिमान् प्रभु की अपार कृपा के ही कारण से है, जिनके पास हृदय की पुकारह्वह्वभले ही किसी भी भाषा में अथवा मूक भाषा में, यदि पूर्ण समर्पण से की जाये, तो अवश्य पहुँचती है। वह दयालु अपनी बाहें फैलाये हमारी सहायता को सदा तत्पर हैं। निराश्रित अवस्था, व्यक्ति के हृदय को पूर्णतया विनीत बना देती है तथा उसे अन्तरतम तक यह अनुभव हो जाता है कि उसका एकमात्र सहायक, रक्षक, प्रत्युत एकमात्र सब-कुछ करने वाला केवल वह, वह ही है, केवल उसी को स्मरण करना चाहिए, उसी का पथ निहारना, उसी की प्रार्थना करना और उसी से आशा करनी चाहिए।

''प्रभु, यदि आप मेरे जीवन को बचाना चाहते हैं तो कुछ करें, क्योंकि मैं कुछ भी नहीं कर सकता।''

('होम' में सुनी जाने वाली एक प्रार्थना)

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' ***स्वामी शिवानन्द***

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ८७वाँ संन्यास-दीक्षा वार्षिकोत्सव

''गुरुदेव त्याग के साकार स्वरूप हैं। उनके आदर्श जीवन के कतिपय पहलुओं में से यदि हम किंचित्-सा अंश भी अपने जीवन में लाने का प्रयत्न करें तो यह उनके संन्यास-दीक्षा दिवस को मनाने का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप होगा।''

(परमाराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज)

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ८७वाँ संन्यास-दीक्षा वार्षिकोत्सव, मुख्यालय आश्रम में १ जून २०११ को यथोचित श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक मनाया गया। परम पावन समाधि मन्दिर में सद्गुरुदेव की परम पुनीत पादुकाओं की विशेष पूजा-अर्चना की गयी जिसमें आश्रम के समस्त संन्यासी, ब्रह्मचारी, साधक एवं भक्त जन अपने प्रिय गुरुदेव के प्रति श्रद्धा-सुमन समर्पित करने के लिए एकत्रित थे।

रात्रि सत्संग में दैनिक स्तोत्र-पाठ एवं प्रार्थना के साथ-साथ डी एल एस मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज तथा पूज्य श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने अपने प्रेरणाप्रद प्रवचनों द्वारा श्रोताओं को आशीर्वादित किया। आरती एवं विशेष प्रसाद सहित सत्संग सम्पन्न हुआ।

परम पिता परमात्मा एवं सद्गुरुदेव का आशीर्वाद हम सब पर हो कि हम वास्तविक त्याग के उच्चतम आदर्शों के अनुरूप अपना जीवन जी सकें!

मुख्यालय आश्रम में श्री स्वामी संवित सोमगिरि जी महाराज का शुभ-आगमन

श्री स्वामी संवित सोमगिरि जी महाराज, जो कि शिवबारी मठ, बीकानेर के श्री लालेश्वर महादेव मन्दिर के महन्त हैं, राजस्थान की महान् आध्यात्मिक विभूतियों में से हैं। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, आश्रम के सादर निमन्त्रण के उत्तर में, श्री स्वामी जी महाराज २ जून २०११ को आश्रम पधारे तथा परम पावन समाधि मन्दिर में रात्रि के सत्संग में प्रवचन दिया। डी एल एस मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने उपस्थित भक्त-समुदाय को श्री स्वामी जी से परिचित करवाते हुए इस बात पर प्रकाश डाला कि युवा-वर्ग में गीता-प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा श्री स्वामी जी का युवा-वर्ग में आध्यात्मिक जागरण लाने में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

श्री स्वामी सोमगिरि जी महाराज ने अपने प्रेरणाप्रद प्रवचन में सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को प्रेमपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए साधना के लिए अत्यन्त बहुमूल्य व्यावहारिक बिन्दु बताये।

भाग्यशाली है वह

जब व्यक्ति ने अपने गृहस्थ-आश्रम के कर्तव्यों को सफलतापूर्वक निबाह लिया है, जब उसके सभी लड़के जीविका में लग चुके हैं, जब उसकी लड़कियों का विवाह भी हो चुका है, तब उसे अपने जीवन के अवशेष भाग को आध्यात्मिक प्रवृत्ति, धार्मिक पुस्तकों के स्वाध्याय और भगवच्चिन्तन में व्यतीत करना चाहिए; पर ऐसा होता ही कहाँ है? बहुत से लोगों को इसका विचार तक नहीं आता कि वे क्या करने जा रहे हैं। पहली नौकरी से अवकाश मिलते ही वे दूसरी नौकरी पकड़ लेते हैं। उनमें लालच यथावत् वर्तमान रहता है। वे जीवन के अन्तिम क्षणों तक रुपयों को ही गिनते रहते हैं, पौत्रों और प्रपोत्रों के विषय में ही सोचते रहते हैं। ऐसे लोगों के भाग्य को क्या कहा जाये? वे सचमुच दयनीय हैं। भाग्यशाली है वह, जो नौकरी से अवकाश पाते ही अपना सारा समय एकान्त में स्वाध्याय तथा ध्यान में व्यतीत करता है।

स्वामी शिवानन्द

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

आगरा (उत्तर प्रदेश): मई २०११ की माहावधि में दैनिक योगासन वर्ग, प्रति रविवार साप्ताहिक सत्संग और प्रति मंगलवार को हवन तथा आध्यात्मिक प्रवचन परिचालित करने के अतिरिक्त जून माह के दिनांक ६ से दिनांक १२ पर्यन्त योगाचार्य श्री प्रभुदयाल गुप्ता जी द्वारा योग-साधना-सप्ताह का आयोजन; श्री गंगा दशहरा को हवन, राहगीरों को मीठे दूध का वितरण और विशाल भण्डारा तथा मधुप्रमेह के मरीजों के लिए योगासन और प्राणायाम का विशेष ट्रेनिंग कैम्प भी सम्पन्न हुए।

अम्बाला (हरियाणा): शाखा द्वारा प्रति रविवार को जपयुक्त साप्ताहिक सत्संग, प्रति मंगलवार श्री हनुमान् जी के स्तोत्र तथा ध्यान के आधिक्य में दिनांक ७ मई को परम पूज्य श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज के जन्मदिन का उत्सव, श्री जे. पी. सभरवाल जी की पुण्य-तिथि को विशेष सत्संग तथा नियमित रूप से होमियोपैथिक औषधालय द्वारा सेवा आदि सुचारु रूप से पूर्ण किये गये।

बरबिल् (ओडिशा): शाखा ने प्रति सोमवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति गुरुवार भक्तों के निवास-स्थानों पर साप्ताहिक चल-सत्संग और पादुका-पूजा सहित दिनभर के कार्यक्रम मासिक साधना-दिन में पूर्ण करके शिवानन्द होमियोपैथिक औषधालय द्वारा माहावधि में ४६८ मरीजों के इलाज सम्पन्न किये।

बरगढ़ (ओडिशा): *नियमित गतिविधियाँ*ह्नह्नदैनिक द्विवार पूजा-आरती; दैनिक योगासन-वर्ग, दैनिक सान्ध्य-सत्संग, स्वाध्याय; साप्ताहिक सत्संग, प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, साप्ताहिक प्रवचन और क्रमिक भगवद्-गीता-पाठ, मासिक चल-सत्संग और दैनिक होमियोपैथिक औषधालय। २७ वर्षों पर्यन्त शाखा के सचिव के रूप में कार्य करने वाले श्री शशिभूषण दास के दुःखद अन्तिम विदा के अवसर पर प्रार्थना-सभा आयोजित की गयी।

ब्रह्मपुर, लांजीपल्ली (ओडिशा): शाखा ने दिनांक २९ मई को निज नूतन इमारत के उद्घाटन-समारोह का एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण, नारायण-सेवा, गीता-यज्ञ, सत्संग, भजन-कीर्तन आदि समाविष्ट थे।

भुवनेश्वर (ओडिशा): शाखा ने दैनिक पादुका-पूजा, साप्ताहिक सत्संग, एक चल-सत्संग, दिनांक २९ मई को मासिक साधना-दिनह्नह्नजिसमें ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना, पादुका-पूजा, योगासन-प्राणायाम, स्तोत्र-पाठ आदि आयोजित किये। ३ घण्टों पर्यन्त अखण्ड मन्त्र-जप और २ घण्टों पर्यन्त हरिहाथ तथा चिदानन्द-दिवस को ६४ प्रतिभागियों द्वारा भागवत-पारायण भी सम्पन्न हुए।

बीकानेर (राजस्थान): *नियमित गतिविधियाँ*ह्नह्नद्विवार पूजा, दैनिक सत्संग; चिदानन्द-दिवस को हवन, मासिक द्विवार सिक्ख ग्रन्थ का पाठ और श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण, शिवानन्द-पुस्तकालय और अकिंचन छात्रों को सहाय। *विशेष गति-विधियाँ*ह्नह्न(१) अक्षय तृतीया : विशेष सत्संग, अन्न-मिठाइयाँ-फल-बिस्कुटों का अनाथालय और अन्धजनों की शाला में वितरण, शरबत का वितरण; (२) श्री आदि शंकराचार्य जयन्ती; (३) श्री रामानुजाचार्य जयन्ती; (४) श्री नृसिंह जयन्ती तथा (५) दिनांक १० मई को श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण।

चण्डीगढ़ : शाखा की दैनिक सान्ध्य-सत्संग, स्वाध्याय सहित साप्ताहिक सत्संग और पश्चात् लगभग ३०० भक्तों को भण्डारा; साप्ताहिक निःशुल्क मेडिकल सलाह-परीक्षण और औषधियों का प्रदान, दिनांक ८ अप्रैल और दिनांक २३ मई को सम्पन्न, मासिक १२ घण्टों का अखण्ड-जप और निःशुल्क योगासन-वर्ग आदि नियमित गतिविधियों के उपरान्त *विशेष गतिविधियाँ*ह्नह्न(१) दिनांक ११, २३ अप्रैल को और दिनांक १४ मई को चल-सत्संग; (२) श्री रामनवमी उत्सव; (३) श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण और श्री हनुमान जी के स्तोत्र-पाठ सहित श्री हनुमान-जयन्ती का उत्सव; (४) परम पूज्य श्री स्वामी

प्रेमानन्द जी की जयन्ती; (५) श्री शंकराचार्य जयन्ती को आदरणीय श्री स्वामी रामराज्यम् जी का प्रवचन तथा (६) आदरणीय श्री स्वामी रामराज्यम् जी शाखा में पधारे तथा माह मई के दिनांक ७ से दिनांक ११ पर्यन्त भक्तों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन दिया।

छत्रपुर (ओडिशा): दैनिक सत्संग के आधिक्य में शाखा ने साप्ताहिक सत्संग, पाँच चल-सत्संग, शिवानन्द-दिवस और चिदानन्द-दिवस को पादुका-पूजन, संक्रान्ति-दिवस को तथा दिनांक २२ मई को एक भक्त के निवास-स्थान पर श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण पूर्ण किये।

चेन्नै, अन्नानगर (तमिलनाडु): शाखा ने, 'शिवानन्द योगाश्रम' में 'अद्वैत सिद्धि' विषयक प्रवचन युक्त विशेष सत्संग किया।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): इस पुनर्जीवित शाखा ने प्रति बुधवार, साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से आयोजित किये। इसके द्वारा, रेलवे-स्टेशन पर, ग्रीष्म ऋतु में शीतल जल-वितरण की भी व्यवस्था की।

घारी (मणिपुर): शाखा के, दिनांक २२ मई के मासिक सत्संग में श्रीमद् भगवद् गीता पर प्रवचन, भजन-कीर्तन, मन्त्र-जप, आरती आदि कार्यक्रम समाविष्ट थे तथा १२० भक्तों की प्रतिभागिता थी।

जामनगर, महिला शाखा (गुजरात): दैनिक पादुका-पूजा के आधिक्य में, शाखा ने प्रति एकादशी को सत्संग पूर्ण किये।

खातिगुडा (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक द्विवार पूजा, साप्ताहिक सत्संग, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र के पारायणयुक्त प्रति एकादशी को सत्संग, दिनांक ८ मई को नारायण-सेवा सहित मासिक साधना-दिवस तथा प्रति माह चतुर्थ रविवार को महामन्त्र के, १२ घण्टों पर्यन्त जप के साथ मासिक गतिविधि सम्पन्न हुई।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): *शाखा की नियमित गतिविधियाँ*
प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संग में स्वाध्याय और संकीर्तन, प्रति एकादशी को संकीर्तन सहित मातृ-सत्संग; दैनिक योगासन-वर्गों की प्रभात में पुरुष-वर्ग के लिए तथा सायंकाल में महिलाओं के लिए सम्पन्नता तथा श्री स्वामी देवानन्द होमियोपैथी औषधालय द्वारा सेवा।

राजकोट (गुजरात): माह जनवरी ११ से माह मार्च ११ की समयावधि में शाखा द्वारा की गयी गतिविधियों की पूर्णता में, शिवानन्द-भवन में साप्ताहिक द्विवार सत्संग, प्रति रविवार और गुरुवार को, श्री नीलकण्ठ महादेव मन्दिर में प्रति शनिवार को। इन उभय केन्द्रों में, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र तथा श्री सुन्दरकाण्ड के पारायण किये गये। मन्दिर के केन्द्र में नियमित रूप से श्री रामचरितमानस पर प्रवचन होते हैं जिनमें लगभग ५० भक्तों की प्रतिभागिता होती है। रेलनगर केन्द्र में दैनिक सत्संग चलते रहे। श्री महाशिवरात्रि को एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया। शाखा के सेवा-कार्य में, निःशुल्क होमियोपैथिक औषधालय द्वारा ५०० मरीजों के और नेत्र-यज्ञों में ५५० मरीजों के उपचार सम्पन्न हुए। साप्ताहिक दन्त-चिकित्सालय द्वारा शिवानन्द-भवन में प्रत्येक वर्ष में ८५० मरीजों के निःशुल्क उपचार हुए और ६७ निर्धन मरीजों को निःशुल्क डेन्चरह्वह्वकृत्रिम दाँतों के सेट दिये गये। आयोजित दो आउटडोर दन्त-यज्ञों में ७८ मरीजों के उपचार किये गये। दो निदानीकरण शिविरों में १४० मरीजों के निःशुल्क उपचार हुए। निर्धन मरीजों के निःशुल्क उपचारों हेतु रुपये ८८००/- का प्रदान, दो योगासन-शिविरों की सम्पन्नता तथा प्रति अमावस्या को अकिंचनों को कोरे राशन का वितरण आदि भी किये गये।

राउरकेला, स्टील टाउनशिप (ओडिशा): शाखा द्वारा छह चल-सत्संग तथा दिनांक १९ मई को १२ वर्षों से कम आयु वाले बालकों के लिए एक दिवसीय बाल-विकास शिविर पूर्ण हुए।

सालेपुर (ओडिशा): *शाखा की नियमित गतिविधियाँ*
दैनिक द्विवार प्रभातीय पूजा और ध्यान; दैनिक सान्ध्य-सत्संग; प्रति माह के रविवारों को गीता-पारायण, योगासन-ध्यान, साधना-दिवस और विशेष सत्संग युक्त विविध कार्यक्रम; द्वितीय शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण, शिवानन्द-दिवस को पादुका-पूजा और माह अप्रैल में १४१ मरीजों के निःशुल्क उपचार तथा औषधियों का प्रदान। *शाखा की विशेष*

गतिविधियाँ ७७ छात्रों को योगासन-प्रशिक्षण श्री रामनवमी को ६ घण्टों का श्री राम-मन्त्र का जप, दिनांक २४ अप्रैल को ६ घण्टों पर्यन्त महामन्त्र-जप तथा परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की जन्म-जयन्ती को पादुका-पूजा।

साउथ बलाण्डा (ओडिशा): शाखा की द्विवार पूजा, साप्ताहिक सत्संग; शिवानन्द-दिवस और चिदानन्द-दिवस को प्रभातीय पादुका-पूजा और विशेष सान्ध्य-सत्संग; संक्रान्ति-दिवस को ३ घण्टों का अखण्ड महामृत्युंजय-मन्त्र का जप और माह के अन्तिम शनिवार को ३ घण्टों पर्यन्त महामन्त्र का अखण्ड संकीर्तन आदि गतिविधियों के अतिरिक्त विशेष गतिविधियों में, महाशिवरात्रि को १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप और दिनांक २७ मार्च को डेढ़ घण्टों पर्यन्त महामृत्युंजय-मन्त्र का अखण्ड संकीर्तन आदि समाविष्ट थे।

सुनाबेडा (ओडिशा): दैनिक सत्संग-स्वाध्याय; साप्ताहिक द्विवार सत्संग के आधिक्य में, शाखा ने श्री वसन्त-नवरात्रि में श्री रामचरितमानस-पारायण; दिनांक १४ अप्रैल के ओडिशा नूतन-वर्ष के दिवस को पादुका-पूजा हवन और श्री हनुमान-चालीसा के १०८ आवर्तन आदि; श्री हनुमान-जयन्ती को श्री सुन्दरकाण्ड तथा श्री हनुमान चालीसा के पाठ इत्यादि भी सम्पन्न किये। दिनांक २२ अप्रैल को सीमीलीगुडा में, *विशेष कार्यक्रमों* में पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन, सत्संग, स्वाध्याय किये गये। दिनांक १ मई को कुछेक भक्तों के मन्त्र-दीक्षा के दिन, पादुका-पूजा, हवन, भजन-कीर्तन, पूर्वाह्न में प्रसाद सेवन तथा विशेष सायं-सत्संग आदि कार्यक्रम समाविष्ट थे। दिनांक ७ मई और १५ मई को विशेष सत्संग आयोजित हुए।

सुनाबेडा, महिला शाखा (ओडिशा): *नियमित गतिविधियाँ*ह्न दैनिक प्रभातीय पूजा; श्रीमद्भागवत-पाठ; मन्त्र-जप, दैनिक सान्ध्य-कीर्तन, साप्ताहिक द्विवार सत्संग; बालकों के लिए साप्ताहिक सत्संग; एकादशी-सत्संग, चिदानन्द-दिवस के विविध आध्यात्मिक कार्यक्रम तथा साप्ताहिक नारायण-सेवा। *विशेष गतिविधियाँ*ह्न (१) श्री महाशिवरात्रि के ब्राह्ममुहूर्तीय कार्यक्रमों से ले कर, २४ घण्टों के कार्यक्रम तथा रात्रिभर प्रहर-पूजाएँ और अभिषेक; (२) परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज शाखा में गये और दिनांक २५, २६, २७ मार्च में, उनकी पावन उपस्थिति और प्रतिभागिता में, आदरणीय श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी और आदरणीय श्री स्वामी परमप्रियानन्द जी सहित अनेक कार्यक्रमों में HAL ऑडिटोरियम में जाहीर सत्संग, ८३ भक्तों को मन्त्र-दीक्षा आदि की सम्पन्नता; (३) श्री वसन्त-नवरात्रि : नौ दिवस श्री रामचरितमानस का पारायण और श्रीमती कमल पाणिग्रही माता जी द्वारा प्रवचन; (४) ओडिया नूतन वर्षह्न श्री हनुमान चालीसा के १०८ आवर्तन आदि शाखा ने उत्साहपूर्वक सम्पन्न किये।

सुरेन्द्रनगर (गुजरात): दैनिक सत्संग और दैनिक मातृ-सत्संग के आधिक्य में शाखा ने प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण और प्रति रविवार को आदरणीय श्री प्रोफेसर कारीया जी द्वारा श्री रामायण विषयक प्रवचन पूर्ण किये। दिनांक २४ अप्रैल से दिनांक २ मई पर्यन्त किये गये श्री रामचरितमानस के नवाह्न-पारायण में अनेक भक्त प्रतिभागी हुए। पूर्णाहुति पश्चात् प्रसाद-सेवन हुआ। शाखा ने चींटियों हेतु आटे के प्रदान से सेवा-यज्ञ, गौ-माताओं के लिए चारा-प्रदान और प्याऊ की व्यवस्था आदि सम्पन्न किये।

वडोदरा (गुजरात): शाखा द्वारा वय-मर्यादा १४ से १८ पर्यन्त के किशोरों और किशोरियों के लिए 'छात्र-शिविर' आयोजित हुआ, जिसमें आदरणीय श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी, आदरणीय डॉ. श्री जयन्त दवे और अन्य वक्ताओं ने, 'जीवन के नैतिक मूल्यों' विषयक तथा भारतीय शास्त्र-ग्रन्थ, अवतार तथा गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के उपदेशों विषयक प्रवचन दिये। आदरणीय उभय श्री जितेन्द्र पण्डित और श्रीमती प्रीति पण्डित ने योगासन तथा स्तोत्र-पाठ के वर्गों का परिचालन किया। परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज और श्री आदि शंकराचार्य जी की जन्म-जयन्ती निमित्त विशेष सत्संग सम्पन्न हुए।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा ने दिनांक ८ और २२ मई को पाक्षिक सत्संग-स्वाध्याय पूर्ण किये।

* * *

सूचना

दिव्य जीवन संघ अहमदाबाद शाखा (गुजरात) में 'अमृत पर्व'

परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की १९५० की अखिल भारत यात्रा के दौरान अहमदाबाद पधारने की पावन सुमधुर स्मृति के रूप में दिव्य जीवन संघ, साइंस सिटि, सोला, अहमदाबाद शाखा ४-११-२०११ से ६-११-२०११ तक एक 'त्रि-दिवसीय आध्यात्मिक सम्मेलन' आयोजित कर रही है।

इस 'अमृत पर्व' में मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ स्वामी जी तथा अन्य संस्थाओं के सन्त जन पधार कर आशीर्वचन देंगे।

१. प्रतिनिधि शुल्क प्रति व्यक्ति ५००/-

२. पंजीकरण के लिए कृपया सम्पर्क करेंह्वह्व

श्री नरेन्द्र पी. शुक्ला, ३०, पंचामृत बंग्लोज पार्ट २, सरस्वती विद्या मन्दिर के निकट, साइंस सिटि रोड, सोला अहमदाबाद ३८० ०६० (गुजरात)

३. धनराशि कृपया बैंक ड्राफ्ट अथवा चैक द्वारा **'दिव्य जीवन संघ, अहमदाबाद शाखा'** के नाम से भारतीय स्टेट बैंक, साइंस सिटि रोड शाखा, अहमदाबाद पर देय, भेजें।

सम्पर्क सूत्रह्वह्व

(१) श्री नरेन्द्र पी. शुक्ला, सचिव, मो. नं. ९४२६३ ९५०९७; (आवास) ०७९-२९०९९१२७

(२) श्री प्रवीनभाई आर. व्यास, उप प्रधान, मो. नं. ९८२५४ ७२१९१

पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के समस्त भक्त जन उपर्युक्त कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

ह्वह्व०ह्वह्व

सूचना

साधना शिविर द डिवाइन लाइफ सोसायटी, बारिपदा शाखा, उड़ीसा

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की असीम कृपा से बारिपदा, उड़ीसा में ९ से ११ सितम्बर २०११ तक द डिवाइन लाइफ सोसायटी, बारिपदा शाखा द्वारा एक तृ-दिवसीय साधना शिविर आयोजित किया जायेगा।

इस शिविर में द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के वरिष्ठ सन्त तथा अन्य संस्थाओं के महात्मागण एवं विद्वज्जन पधारेंगे। हम द डिवाइन लाइफ सोसायटी की समस्त शाखाओं के भक्तों को आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमन्त्रित कर रहे हैं।

प्रतिभागिता शुल्क (प्रत्येक व्यक्ति)ह्वह्व२०० रुपये

शुल्क तथा सूचना भेजने के लिए निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें :

श्री रघुनाथ मोहन्ती, सेक्रेटरी, द डिवाइन लाइफ सोसायटी शाखा, स्थान : Abmicasahi, वार्ड नम्बर ५

डाकघर : बारिपदा, जनपद : मयूरभंज (उड़ीसा)

नामांकन (Enrollment) हेतु तथा अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए सम्पर्क सूत्र :

१. श्री रघुनाथ साहू, मोबाइल नम्बरह्वह्व८७६३३०२१२८

२. श्री सुधांसु शेखर गान्धी, मोबाइल नम्बर ह्वह्व९४३९७०११९०

३. श्री विजय कुमार दास, मोबाइल नम्बरह्वह्व९७७८७७२६७८